श्रद्धेय पिता जी

श्रीमान्

पं० मुन्नालाल जी गौतम

के चरण कमलों में

जिनके पवित्र आशीर्वाद से यह

सुमन सुरभित हो सका है

सादर समर्पित

"वस्तु जैसी भी है, यह देव!

समझना मत इसको प्रतिकार॥

चरण पर अर्पित है सस्नेह,

दया कर करो इसे स्वीकार ॥"

स्त्री–पात्र परिचय

१	लक्ष्मी जी	विष्णु भगवान् की अर्धांगिनी
२	पारवती जी... ...	शंकर भगवान् की अर्धांगिनी
३	सुबुद्धि	दम की अर्धांगिनी
४	सरस्वती	बुद्धि को तीव्र करने वाली शक्ति
५	विद्या देवी	अविद्या को हटाने वाली शक्ति
६	दया	... ... शुभ वासनायें
७	क्षमा	
८	शान्ति	
९	सरला	छल की पत्नी
१०	मोहिनी	मोहित करने वाली शक्ति
११	चपला	... ... मोहिनी की सहेलियाँ
१२	चम्पा	
१३	कामिनी	
१४	भामिनी	

पुरुष–पात्र परिचय

१	विष्णु भगवान्	लक्ष्मी पति
२	शङ्कर भगवान्	गिरिजा पति
३	नारद जी	ब्रह्म पुत्र
४	कुबेर जी	भगवान् के कोषाध्यक्ष
५	दम	इन्द्रिय दमन शक्ति
६	ज्ञान	
७	वैराग्य	
८	शील	... ...मोक्ष दायिनी शक्तियाँ
९	संतोष	
१०	धैर्य	
११	विवेक	
१२	काम	
१३	क्रोध	
१४	लोभ	... अधोगति में गिराने वाली शक्तियाँ
१५	मोह	
१६	अहंकार	
१७	छल	... धोखा देने वाली शक्ति
१८	अज्ञान ...	... अन्धकार में डालने वाली शक्ति

निवेदन

नाटक प्रेमी वृन्द !

बहुत दिनों से सेवक के हृदय में यह कांक्षा थी कि कोई धार्मिक पुस्तक लिखूं, पर धर्म जैसे गुरुतर विषय पर लिखना मुझ जैसे मूर्ख मनुष्य का काम न था। मेरे पास न तो विद्या ही है और न बुद्धि। यदि है तो केवल पुस्तक लिखने की तीव्र प्रेरणा। यह प्रेरणा क्यों हृदय में उठी ? इसका जवाब मेरे पास सिवाय इस के और क्या हो सकता है कि मैं एक यन्त्र हूँ, यन्त्री ने जिस विधि इसका संचालन किया यह चल पड़ा। उसने मेरी लग्न देखकर मुझे प्रेरित किया कि 'काम दमन' क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार दमन नाटक लिख, जिससे धर्म शिक्षा का जनता में प्रचार हो। काम दमन नाटक प्रभु की असीम कृपा से छप गया। बाक़ी और नाटक भी क्रमशः प्रकाशित होंगे।

इस ड्रामे को मेरे पूज्य पिता जी का आशीर्वाद समझिये जिन्होंने मुझे समय समय पर उचित चेतावनियाँ दी हैं।

मैं श्रीमान् पं० मायादत्त जी पाण्डे शास्त्री जी का कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस का संशोधन किया है।

मैं अपने हित चिन्तक श्रीमान् साहू रघुबीर सरन साहब को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इसके छपवाने के लिये प्रेरित किया।

अंत में जनता से नम्र निवेदन है कि यदि कुछ त्रुटियाँ रह गई हों तो उनसे मुझे सूचित करदें जिससे अगले संस्करण में वह शुद्ध कर दी जायँ।

जनता की राय पर पुस्तक का नाम "काम देव दमन" बदल कर "सदाचार सदन" रक्खा जाता है।

कृपा कांक्षी—लेखक

भूमिका

प्राय: भारत में नाटकों के निर्माण पक्ष में अनेकशः कवि लोग अग्रसर हो चुके हैं जिनकी काव्य शैली को देखकर पश्चात्य विद्वान भी दांतों तले अंगुली दबा जाते हैं, वास्तव में वेदादि सच्छास्त्रों के समझने में अल्प मति पुरुषों के लिये ही कवियों ने उपन्यास तथा नाटकों का रूप दिया था। बहुधा प्राचीन काल में शिक्षाप्रद नाटक गम्भीर भावों से पूर्ण ज्ञान का दीपक दिपाने वाले होते थे, लेकिन यवन साम्राज्य के आने पर नाटकों का चित्रण बदल गया . वह गन्दे रूपमें असभ्यता के द्योतक तथा कामोपभोग की सामग्री समझे जाने लगे । एतदर्थ भारत वासियों को इन गन्दे उपन्यास ड्रामा आदि ने जिस शोचनीय दशा को पहुँचा दिया है वह किसी भी चतुर मनुष्य से छिपा नहीं है उससे दिन प्रति दिन नवयुवकों के भावों पर काम विलास की लालिमा झलक कर कुछ समय में ही उनकी प्रतिमा स्वास्थ्य, बल, दर्प, बुद्धि अस्ताचल के शिखर पर जा विराजती है। वे रुग्ण, क्रोधी, कामी, अधम, छल, कपट करना आदि आसुरी सम्पत्ति के अधिपति होकर अपनी आत्मा को अधमाधम योनियों में स्वयं गिराते हैं। भगवान् श्री कृष्णचन्द्र ने कहा है— आत्मन्येववात्मनः शत्रु—यानी आत्मा का आत्मा ही मित्र और आत्मा ही शत्रु होता है। जब कि हमारे नवयुवक भावी भारत माता के सपूत–कि जिनके बल पर प्रत्येक देश वासी बलवान् हो सकता है उन स्फुटित कुसुम की भाँति शिशुओं को ऐसे गंदे खेल तमाशे दिखाकर उन्हें सदैव को जब अकर्मण्य बना देते हैं फिर किस प्रकार हम भविष्य में अभ्युदयाकांक्षी हो सकेंगे अस्तु विशेष कहने की आवश्यकता नहीं है। नाटक आपने बहुत देखे तथा सुने होंगे लेकिन यह भी एक नाटक है कि जिसे पढ़ लेने पर आप को स्वयं ज्ञान होगा कि लेखक ने कितने अनोखे ढंग

पर एक शिक्षा प्रद सीन आपके सामने रखा है। आरंभिक सूत्रधार ने ही नाटक का तत्व ऐसी युक्ति से बताया है कि जिस से सहज में ही ज्ञान हो सकता है कि इसकी भित्ति एक उत्कृष्ट ज्ञान नसैनी है। देवताओं की झाँकी नाम हैडिंग देकर दिखलाया गया है कि हम भारतवासियों के पापाचार से भगवान् के दरबार में भी कितना कोलाहल मच रहा है। हालाँकि यह उदाहरण सिर्फ मनुष्यों के ज्ञानार्थ ही दिया है लेकिन विचार करने से ज्ञात होता है कि भारत को यह कहाँ तक उपयुक्त हो सकता है। वस्तुतः नाटक के अन्दर प्रायः लेखक ने अनुभवी और रोचक शब्दों का प्रयोग किया है। भाषा सरल और सीधी होने के कारण हर एक थोड़े बहुत पढ़े लिखे की समझ में आसानी से आ सकती है। इसमें बताया गया है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को किस प्रकार ज्ञान वैराग्य, दया, शान्ति आदि जीत सकते हैं। यह नाटक मनोवेग को जीतने की कुंजी है। दलित अवस्थाओं में पाप अपने दुःख से काम का साथी होकर पतिव्रताओं के सतीत्व को नष्ट करना चहता है और वास्तव में काम, क्रोध आदि मनुष्य के लिए बड़े भयंकर शत्रु हैं। भगवान् श्री कृष्ण बताते हैं कि—

हे पार्थ रजोगुण से होते ये काम क्रोध बलकारी हैं।
संपूर्ण पाप की खान मित्र ये शत्रु बड़े भयकारी हैं॥

दो०—गर्भ जरायु मुकल मल धूम्र ढका अंगार।
ढाँक रखा त्यों कामने यह सारा संसार॥

इस लिये काम को जीतने पर ही आत्म तत्व लक्ष्य में आया करता है। इस लिये पाठक स्वयं पढ़कर समझ लेंगे कि काम के दमन करने के लिये यह पुस्तक यथा नाम तथा गुण साबित होगी।

आयुर्वेदाचार्य—

पं० रामचन्द्र शास्त्री

अड्डा बाजार, चन्दौसी।

सदाचार-सङ्गम नाटक

मंगलाचरण

*** गायन ***

नट नटी आदि—

गणपति बन्दों चरण तुम्हारे।
दुःख विनाशो सकल हमारे॥
शारद तुमको सदा मनाऊँ।
विमल बुद्धि की भिक्षा पाऊँ।
पूर्ण होंय शुभ काज हमारे॥
शेष दिनेश रमेश महेशा।
तव प्रताप कट जायँ कलेशा।
वरदानी तुम नाथ हमारे॥
तुम सुखरूप सदा सुख सागर।
करुणा निधि करुणा के आगर।
भय सङ्कट सब टरें हमारे॥
सिद्ध करो मम कारज स्वामी।
करुणा मय 'हरि' अन्तर्यामी।
अन्तर की सब जानन हारे॥

सूत्रधार—

दोहा...है माया चंचल बड़ी ठगत फिरे संसार,
लोग मुग्ध हो जात हैं सुन मीठी झंकार।
अब कथा वार्ता धर्म ग्रन्थ सुनने से जी अकुलाता है।
लख खेल तमाशा नाचरंग सिनमा में जी लग जाता है॥
इन खेल तमाशों का मन पर ऐसा प्रभाव जम जाता है।
करता है पाप अनेकों मन पर तनक नहीं शर्माता है॥
दोहा...देख दशा यह देश की हुआ दास को ख्याल।
किस विध कुचला जायगा दुश्चरित्र का व्याल॥
जलवायु शुद्ध भोजन द्वारा, तन रोग रहित हो जाता है।
और धर्म ग्रन्थके सुनने से मनका विकार घट जाता है॥
भगवत इच्छा से प्रेरित हो भावों ने नाटक रूप लिया।
राजी भगवान उसी में हैं जिस में भक्तों ने याद किया॥
कहने को तो यह नाटक है पर सार है धार्मिक ग्रन्थों का।
स्नान को निर्मल धारा है सुनने को वचन हैं सन्तों का॥
जो श्रवण मनन यह कथा करें सब पाप ताप कट जायेंगे।
दुर्जन दुर्जनता तज कर के सब हर से प्रीति बढ़ायेंगे॥
यह कथा नहीं है कल्प वृक्ष जो ध्यायेंगे सो पायेंगे।
ज्ञानी तो स्वयं ही ज्ञानी हैं मूरख ज्ञानी हो जायेंगे॥
दोहा...शिव और शिवा का कथन है सुनिये कान लगाय।
मन वाञ्छित फल यूं मिले कहता हूं समझाय।
सौभाग्यवती जो सुनें कथा पातिव्रत धर्म को धारेंगी॥
विधवा नारी जो सुनें कथा वह हरि से हेत लगावेंगी।

बालकगण कथा श्रवण करके बल बुद्धि औ विद्या पायेंगे ॥
सुन कर के युवा पुरुष इस को विज्ञान पूर्ण हो जायेंगे ।
ज्ञानी ध्यानी अरु सन्त सभी अपने मन में हर्षायेंगे ॥
निस्सार जगत को समझेंगे एक ईश को सार बतायेंगे ।

(नट नटी का प्रवेश)

नटी— स्वामिन् ! आज तो रंग मंच की कुछ शोभा वरणी नहीं जाती है । दर्शकगण उमड़े चले आरहे हैं । कौनसा दृश्य दिखा कर इनके मन को आनन्दित करोगे ।

नट—प्रिये ! आज इनको वह दृश्य दिखलायेंगे जिस से इनकी बुद्धि कुमार्ग को छोड़ सुमार्ग गामी बने ।

अब सच्चे उपदेश से, करते हैं आरम्भ ।
" सदाचार " की गाथा फिर होगी प्रारम्भ ॥
हरि हर विबुध समाज के, द्वारा यह उपदेश ।
एक मात्र जन बोध हित दिखलाते सविशेष ॥

अब ज्यादा वाद विवाद का समय नहीं है ।

प्यारी ! चल उस ओर को, तज के सकल विकार ।
देखो है क्या हो रहा, विष्णु के दरबार ॥

[देवताओं की झाँकी]

[विष्णु भगवान् का दरबार लगा हुआ है नारद जी
हरि गुण गाते वीणा बजाते चले आ रहे हैं।]

नारदजी— ❀ गाना ❀

तुम्हारे चरणों में भगवान् , करें नित नूतन प्रेम प्रदान।
दीनानाथ दयाल तुम्हीं हो, करुणाकन्द कृपाल तुम्हीं हो ॥
सत् चित् आनंदकन्द महान् , करें नित नूतन प्रेम प्रदान।
सृष्टा सर्वाधार तुम्हीं हो, प्यारे परमोदार तुम्हीं हो ॥
'हरी' तुम ऐसा दो वरदान, करें नित नूतन प्रेम प्रदान।

विष्णु जी—आइये देवर्षे ! कहिये किधर से आगमन हुआ ?

नारद जी—क्या पूछते हो भगवन् !

देशाटन करते हुए, पहुंचा भारत बीच।
रक्तवर्ण की हो रही, थी भारत में कीच ॥
देख सका नहि दृश्य वह, बैठा आँखें मीच।
नैनों की जल धार से, आया भारत सींच ॥

विष्णु जी—ऐसा अपार शोक क्यों हुआ ऋषिराज ?

नारद जी—प्रभो ! भारत में कुछ अनोखी ही छटा छिटक रही है जिधर देखो उधर कलुषित प्रेम, तथा चरित्र हीनता के चित्र सन्मुख खड़े दिखाई दे रहे हैं।

विष्णु जी—तुम्हारी तरह मैं स्वयं भी भारत के लिये व्याकुल हूँ।

भू भार हटाने के हेतु, मैंने श्री कृष्ण अवतार लिया।
उत्तम शिक्षा देने को, गीता सा ग्रन्थ प्रचार किया ॥

दुर्बुद्धि दुर्जनों ने मेरे, वचनों पर भी नहीं कान दिया।
मैं कहते २ हार गया, सद्वृत्त नहीं स्वीकार किया॥

नारद जी—भगवन ! क्या इनके असाध्य रोग का कोई उपाय नहीं।

विष्णु जी—देवर्षे ! इसका सोच तजो, देखो, संसार में तभी तक शान्ति बनी रहती है, जब तक कल्याण कारी भावनायें देश में प्रचलित रहती हैं। प्रेम की डोरी में क्या अपने क्या पराये सभी बँधे रहते हैं और संगठित रहते हैं। जहां निस्वार्थ प्रेम है वहीं सुख और शान्ति का निवास है।

नारद जी—भगवन् ! अबतो भारत के कर्मों में उतना ही अन्तर है जितना आकाश और पाताल में या दिन और रात में।

विष्णु जी— ठीक कहते हो ऋषिराज।

भारत नहिं पहला भारत है शुभ कर्म यहाँ कब होता है।
अभिमान में डूबा जाता है मत भेद बीज को बोता है॥
दिन रात परस्पर लड़ते हैं, दुख संगी कोई न होता है।
जहां फूट बीज जिसने बोया, सुखनींद कहीं वह सोता है॥
आलसी प्रमादी बन कर जो, नर समय को अपने खोता है।
वह खड़ा २ पछताता है और सिर धुन २ कर रोता है॥

नारद जी सुनो ! अधिकाँश भारत के निवासी अब छल, प्रपञ्च, घमंड, और अभिमान जैसे परम शत्रुओं को अपना मित्र समझते हैं, और अपने ही सगे सहोदर भ्राता को अपना शत्रु समझते हैं। एक भाई खाता, दूसरा मुंह ताकता रह जाता है।

भाई के प्रति भाई की जब घृणा बढ़ जाएगी।
नाव भारत की भँवर में जाके गोता खाएगी ॥

नारदजी—भगवन्! यदि ऐसा हुआ तो भारत में बड़ा अनिष्ट होगा।

विष्णु जी—आँखों से तो अंधे हैं पर नाम नैनसुख रखते हैं।
यदि कोई उन्हें समझाता है गाली से स्वागतकरते हैं॥

[विद्या देवी का प्रवेश]

विष्णु जी—कहो विद्या देवी आपका आगमन कैसे हुआ।

विद्या देवी— ❀ गाना ❀

क्या हेतु कहूँ आने का प्रभु, मेरा मान रखैया कोई नहीं।
भारत में अविद्या छाय गई, मेरी बात पुछैया कोई नहीं॥
सद्बुद्धि नहीं सद्भाव नहीं सद् कर्म नहीं व्यवहार नहीं।
सद् ग्रन्थ की मिट्टी ख्वार हुई, विप्रां का पुजैया कोई नहीं॥
जहां दूध की नदियाँ बहती थीं, वहाँ खून की नदियाँ बहती हैं।
कुत्तों का पालन सीख लिया, गौओं का चरैया कोई नहीं॥
जपदान नहीं, गुण गान नहीं, सत्पुरुषों का सम्मान नहीं।
'हरि' कहां मैं जाकर वास करूं, मेरी नाव खिवैया कोई नहीं॥

[कुबेर जी का प्रवेश]

विष्णु जी—कहिये कुबेर जी आप क्या समाचार लाये हैं?

कुबेर जी—समाचार बड़ा भयंकर है भगवन्!

विष्णु जी—कैसा भयंकर समाचार लाये हैं, जल्दी सुनाइये, देर न लगाइये।

कुबेर जी—भगवन्! कुछ कहते नहीं बनता, भारत की अवस्था दिन प्रति दिन कला हीन होती जाती है और अब

पर अज्ञान का बादल चारों ओर से मंडरा रहा है।
उन्नति के मार्ग में रोड़े अटकाये जा रहे हैं।
अन्याय राज्य में होता है दुखियों की टेर नहीं सुनते।
अपने हितको हित समझे हैं औरों के हितकी नहीं सुनते॥
ये दुखिया दीन किसान सभी त्राहि २ चिल्लाते हैं।
मद मस्ती में कोई अपनी, हँसते हैं और इठलाते हैं॥

विष्णु जी—वास्तव में यह समाचार बड़ा भयंकर है। कुबेर जी!

[भगवान् शङ्कर व पार्वती जी का प्रवेश]

[भगवान् विष्णु जी व लक्ष्मी जी स्वागत को उठते हैं]

विष्णु जी—अहो भाग्य दर्शन दिया करके कृपा अपार।
अनुगामी निज जान प्रभु दो आज्ञा त्रिपुरार॥
आसन सुशोभित करो नाथ अपने परम प्रकाश से।
अनुचर मुझे जानो अपना अपने हृदय विकास से॥

शङ्कर जी—अनुचर तो मैं ही हूं स्वामी आप मेरे भगवान् हो।
छोटों को आदर देते हो तभी तो आप श्रीमान् हो॥

लक्ष्मी जी—आओ जगत माता बैठो, मैं सादर शीश झुकाती हूँ।
नैना दर्शन से तृप्त हुए मन मुदित हुआ सुख पाती हूँ॥

पार्वती जी—जिन कोमल वचनों से माता है मेरा सम्मान किया।
यह सारी प्रभुता आपकी है यह मनमें मैंने जान लिया॥

विष्णु जी—कहिये भगवन्! कोई नवीन समाचार?

शङ्कर जी—अब तो सब ही समाचार नवीन हैं?

विष्णु जी—सो क्या भगवन्?

शङ्कर जी—छोड़ी मर्यादा भारत ने अब दुष्टता बढ़ती आती है।
धृष्टता उनकी सुन सुन कर फट रही हमारी छाती है॥
विष्णु, दिगम्बर, शिवशंकर वह अपने नाम बताते हैं।
लक्ष्मी कान्त, ओंकार नाथ, नामों से पुकारे जाते हैं॥
कोई मधुसूदन, कोई मनमोहन, इन्द्रादिनाम रखाते हैं।
पर पापाचरण के करने में वे जरा नहीं शरमाते हैं॥
जब मैंने अपने कान सुना शिवशंकर बड़ा व्यभिचारी है।
ओंकारनाथ ने लाखों की सम्पत्ति जुए में हारी है॥
लक्ष्मी कान्त ने साधू के सिर पर दुहत्ती झाड़ी है।
सब देव गणों की इसी तरह से होती देखी ख्वारी है॥
कोई साधू रूप बनाकर सुख स्वादके लिये तड़पता है।
कोई पाखंडी ब्राह्मण बनकर मान के लिये फड़कता है॥
इन दुराचारियों से भगवन्, अब मन अपना घबड़ाता है।
है दुराचार गौरव इनका सज्जन सत्कार न पाता है॥

[लक्ष्मी जी पार्वती जी से कहती हैं]

लक्ष्मी जी—आप भी अपना विचार प्रकट कीजिये।

पार्वती जी—जो दशा देवताओं की है, सोई दशा हमारी है।
न जाने भारत में, नारीजन की मति किसने मारी है॥
लक्ष्मी दुर्गा पार्वती कह कह कर उन्हें बुलाते हैं।
सती कमला सावित्री निज मुख से खूब बनाते हैं॥
अधम नारियां नाम की महिमा रात दिना ठुकराती है।
बस इसी सोचने घेरा है हम व्याकुल हो हो जाती हैं॥

लक्ष्मी जी-उनका आशय कुछ औरही है सो मैं तुम को बतलाती हूँ।
रहस्य है कुछ इसके अन्दर सो मैं तुमको दिखलाती हूं॥

देवी सम्प्रदाय के नाम वह छांट छांट कर रखते हैं।
वह तो तुम्हारे प्रेमी हैं यों याद तुम्हारी करते हैं॥

पार्वती जी—बलिहारी इस प्रेम की।
भोजन भोजन कहने से क्या पेट कोई भर पाती है।
पानी पानी कहने से कब प्यास किसी की जाती है॥

विद्यादेवी—अच्छा भारत अब सोले सुखनींद तू कब तक सोवेगा।
होश तुझे जब आवेगा तो शीश पकड़ कर रोवेगा॥
मैं तेरा साथ छोड़ती हूं क्यों तू मुझ से घबड़ाता है।
कर प्रेम अविद्या पापिनसे दुख पाता या सुख पाता है॥
वेदादि ग्रन्थ भी जाते हैं नहीं ठहरें उन स्थानों में।
जिस जगह न जिसका मान कोई क्यों रुकें वे उन स्थानोंमें॥

कुबेर जी—जो देश मुझे अपनायेगा मैं उस से नाता जोड़ूंगा।
जो देश मुझे ठुकरायेगा मैं उस से नाता तोड़ूंगा॥
अभिमानी भारत मैं तुझ से अब अपना पिंड छुड़ाता हूं।
सुख और सम्पत्ति तेरी लेकर मैं अन्य देश में जाता हूं॥

[दया देवी का प्रवेश]

दया—(भगवान् से) यह सब आप क्या करा रहे हैं?
वीर विहीन भारत को जो चाहेगा आन दबायेगा।
अविद्या पापिन के कारण दुख क्लेश, अनेकों पायेगा॥
दैवी कोपों के प्रभाव से वह सिहर सिहर रह जायेगा।
किसके बल धीरज बांधेगा जब जी इसका अकुलायेगा॥

विष्णुजी—मेरे पास इसका क्या उपाय है, जैसी करनी वैसी भरनी।

❀ गाना ❀

बने कैसे निपट गँवार ❀ न कीन शुभ काम रे ॥टेक॥
जप यज्ञ दान नहीं कीन ❀ धन जन में रहा लवलीन ।
भक्ति में चित्त नहीं दीन ❀ कमीन कियो काम रे ॥
हैं जेते धर्म के खेत ❀ सब पटे कुकर्मन रेत ।
द्वै टूक उदर के हेत ❀ तल्लीन सुबह शाम रे ॥
तन धार फुलन के हार ❀ कर रहा घमण्ड अपार ।
मर जर के हुइ है छार ❀ महीन मानुष चाम रे ॥
अब हूँ नहीं चेता हाय ❀ कर मल मल के पछताय ।
कहो कैसे 'हरि' को गाय ❀ मलीन जा को काम रे ॥

दया—भगवन् ! आप कहते तो यथार्थ हैं, पर ।

विष्णु जी—पर क्या दया ?

दया—दया तो सदा दया ही करती है ।

विष्णु जी—तुम मेरी कृपा पात्री हो तुम्हारा कहा मुझे कुछ करना ही पड़ेगा ।

दया—मैं स्वयं कष्ट उठाऊँगी, भारत को सुख पहुँचाऊँगी ।
जिस भूमि ने मेरा मान किया मैं उसे छोड़ कहां जाऊँगी ॥
दुष्कर्मों की इस भारत में यद्यपि न कमी दिखलाती है ।
फिर भी कुछ उत्तम पुरुषों ने यह मेरी जुड़ाई छाती है ॥
उन उत्तम पुरुषों की खातिर भारत का संग न छोड़ूंगी ।
और क्षमा शान्ति के सहित ज्ञान को सदा साथ में रखूंगी ॥
इतनी भिक्षा माँगे देदो मैं रहूं वहीं तुम आ जाना ।
उपकार सदा मैं मानूंगी अब मेरा पूरा कर आना ॥

शिव व विष्णु—तथा अस्तु । (परदे का गिरना)

[दया का जाना, राह में सरस्वती का गाते हुए मिलना]

सरस्वती— ❀ गाना ❀

आज भारत तुझे सब देवता ठुकराते हैं।
दुर्गुण तुझ में ओ मेरे लाल भरे जाते हैं॥
आँखें तेरी न खुलीं होश न आया तुझ को।
विद्या बल सारे तेरे हाथ चले जाते हैं॥
दुखी व दीन औ नादान कहायेगा तू।
हम तो इस दुख से परेशान हुए जाते हैं॥
सब चला जाय, चला जाय, चला जाने दो।
'हरी' न जाये धरम ये ही तो समझाते हैं॥

कहो बहिन दया! किस ओर जा रही हो। तनिक भारत की ओर दया करके देखो, कुछ दृष्टि फेरो, जिससे भारत का कल्याण हो।

दया—मेरा जो कर्त्तव्य है वह मैं हर समय करने को तैयार हूं। क्या आपको भी कुछ ख्याल है?

सरस्वती—अवश्य, क्या मैं उन भारत लालों को भूल सकती हूँ जिनके पूर्वजों ने सदा मुझे आदर दिया और कभी नहीं भुलाया। आज मैं उनके लालों को दुष्कर्मों में पड़ा देख कर उनका साथ छोड़ दूँ, यह कभी नहीं हो सकता, दया! यदि देवता ही ऐसा व्यवहार करने लगेंगे तो आधुनिक मनुष्य तो न जानें क्या करेंगे। अच्छा तो मुझे बताइये कि मेरा कर्त्तव्य क्या है।

दया—तुम कवियों की प्रेरणा को बदल सकती हो। इस लिये उन कवियों द्वारा दूषित प्रेम पूर्ण कविताओं के स्थान पर

सद्भाव पूर्ण, ईश्वर भक्ति की कवितायें कराओ जिससे मनुष्यों की रुचि पारब्रह्म की ओर खिंच जाय और वह अपमान से रूठे हुए देवगण मनाये जा सकें। तभी कल्याण हो सकता है।

सरस्वती—मुझे स्वीकार है। जो मनुष्य मेरा स्मरण करके कविता करेंगे, मैं उनकी प्रेरणा को बदल कर भक्ति की प्रधानता के साथ कवितायें कराऊँगी। मुझे उसी में सुख है जिस में देश का उपकार हो।

[सरस्वती का जाना और दया का गाते हुए आना]

❋ गाना ❋

दया—ध्यान करो हरि चरण का प्यारे, क्यों फिरते मारे मारे।
मनुष जन्म की क़दर न जानी, बुद्धी माया हाथ बिकानी॥
लोभ मोह में डूब गई कुल भारत की सन्तान ॥ प्यारे ॥
जितने जीव जोन जग माहीं इन्द्री सुख दुर्लभ है नाहीं।
सत्य ज्ञान बिन नर तन ऐसा जैसे मर्कट श्वान ॥ प्यारे ॥
मन बहुरंगी नाच नचावे, लाज न कान्हाँ तुमको आवे।
मन मन्दिर में क्यों नहीं रमता, है खाली स्थान ॥ प्यारे ॥
अब हम स्वामी शरण गही है, क्षमा करो जो चूक भई है।
हरो 'हरी' अब पीर हमारी, हम हैं निपट अज्ञान ॥ प्यारे ॥

[सूत्रधार का प्रवेश]

सूत्रधार—ज्ञान हीन दुर्जन मानव को कामातुर काम बनाता है।
फिर हाल के पर्दों शुद्धी पर क्या नंगा नाच नचाता है॥
यह सदाचार सदन ड्रामा अब शुरू जो होने वाला है।
नर नारी को शिक्षा देगा जड़ मति को हरने वाला है॥

(अंक पहला दृश्य पहला)

[स्टेज पर ज्ञान खड़े आप ही आप कह रहे हैं]

ज्ञान—जिधर देखो उधर अत्याचारियों के अत्याचार की दुहाई दी जारही है। जन समुदाय पापाचरण की कमाई में रत है। धर्म का झूठा अभिनय दिखा कर छली लोग भोले भाले प्राणियों को जाल में फंसाते हैं। उनकी दुर्गति कराते हैं, और आप चैन की बंशी बजाते हैं। हे भगवन्! क्या आपको भी इन दीन प्राणियों के हाल पर दया नहीं आती।

[एक ओर से दया देवी का प्रवेश। दया को देख कर ज्ञान पूछता है।]

ज्ञान—माता तुम कौन हो ?

दया—पुत्र मैं वही हूं जिसे याद करते करते तेरा कंठ सूख गया हृदय अकुला गया।

ज्ञान—अर्थात्।

दया—अर्थात् पृथ्वी के प्राणी मुझे दया दया कह कर के बुलाते हैं।

ज्ञान—धन्य माता जो आज तुम्हारे दर्शन मिले।

मैं कृतार्थ हो गया ऐ माता तुझ को पाय के।
वेदना हरलो मेरी ऐ मात! तूने आय के॥

[स्वागत एक ओर से क्षमा व दूसरी ओर से शान्ति का प्रवेश]

दया—क्या तुम दोनों से भी बिना आये न रहा गया?

क्षमा—बहिन हाथी के पांव में सब का पाँव है। यह कैसे हो सकता है, कि जहां दया जाय वहाँ क्षमा न जाय और जहाँ क्षमा जाय वहाँ शान्ति न आय।

ज्ञान—माताओ आपको मेरा प्रणाम स्वीकार हो।

शान्ति—पुत्र चिरञ्जीव रहो।

ज्ञान—माता शान्ति तुम चिन्तित सी क्यों दिखाई पड़ती हो ?

क्षमा—बेटा ! तुम ऐसा प्रश्न क्यों करते हो, इन बातों से तुम्हें क्या मतलब, जाओ खेलो खाओ आनन्द मनाओ।

ज्ञान—माताओ ! मैं खेलूं खाऊँ आनन्द मनाऊँ और तुम को तुम्हारे हाल पर छोड़ जाऊँ तो तुम्हीं बताओ कि जग में मुँह कैसे दिखाऊँ।

दया—बेटा ! अभी तुम नादान हो जिन शत्रुओं से हम भयभीत हुई हैं। वह कोई साधारण शत्रु नहीं, बल्कि वे बड़े ही मायावी हैं उनका तुम जैसे बच्चे क्या कर सकते हैं।

ज्ञान—मैं उनका कुछ कर सकूंगा अथवा न कर सकूंगा इसको तो समय ही बतावेगा, पर मैं जो कुछ करूंगा वह अपना कर्तव्य समझ कर करूंगा यह मुझ से कब देखा जायगा कि मेरी मातायें दुष्टों के हाथ सताई जायें और मैं मूढ़ की नाईं खड़ा २ देखा करूँ।

[धड़ाके की आवाज के साथ काम, क्रोध, लोभ, मोह, और अहंकार का प्रवेश]

काम—हाँ ! हाँ ! आज इन तीनों दुष्टाओं को घेर लिया है।

क्रोध—अब बच कर कहाँ जा सकती हैं। मार डालो कंटक टालो।

दया—हमें मार कर तुम्हारे क्या हाथ आयेगा।

क्रोध—यही कि हमारी चलती गाड़ी में कोई रोड़ा तो न अड़ायेगा।

क्षमा—हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है।

लोभ—बड़ी भोली भाली हैं।

मोह—चूरण की गोली हैं चट कर जाओ।

शान्ति—हम दीन हैं हमें न सताओ।

अहंकार—इन के अस्तित्व को ही मिटा दो।

दया—हम तुम्हारे आगे गिड़गिड़ाती हैं।

क्रोध—तो ज़रा तुम भी तो हम पर दया करो।

क्षमा—चुप चांडाल! अपनी ज़ुबान को सम्हाल, कभी इस पवित्र नाम को अपनी ज़ुबान से न निकाल।

लोभ—तेरी यह मजाल।

अहंकार—काट दो इनका सर कि मिट जाय सब बवाल।

[क्रोध का तलवार को म्यान से निकालना]

(दया डर कर)

दीन बन्धु भगवान् दयामय कृपा सिन्धु भव भय हारी।
संकट मोचन विश्व विमोचन निज जन के हो रखवारी॥
संकट भंजन जन मन रंजन दुष्ट-निकन्दन असुरारी।
व्याकुल हैं हम दुखिया अबला टेर सुनो करुणा धारी॥
तुम्हें क्षण भर नहीं लगती कहीं भी आने जाने में।
लगाई देर क्यों इतनी हमारे ही छुड़ाने में॥

भगवान! यदि इस समय न आये तो दुष्टों की चढ़ बनेगी भ्रुकुटी तनेगी, हमारे प्राण जो लेलें तो कुछ नहीं चिन्ता, बुरा कहें जो हमें चान्डाल कहते हैं। पर कहें न देख कर कभी यह हमें व्याकुल, कि यह उनके भक्त हैं जिनको दयाल कहते हैं।

क्रोध—बस, बस, बस ख़ामोश।

[क्रोध का तलवार निकाल कर झपटना ज्ञान का बीच में आ जाना अपना सिर तलवार के नीचे कर देना क्रोध के हाथ से तलवार का छुट कर ज़मीन पर गिर पड़ना]

क्रोध— अरे बालक ! तू कौन है जो बिन आई मौत मरता है ।

ज्ञान— अरे क्रोध, ओ मूर्ख क्रोध, जब मेरी मौत ही नहीं आई तो मेरा मारने वाला कौन ?

अहंकार—रे बच्चे हमको तेरे हाल पर तरस आता है । जा तू हमारे आगे से टल जा नहीं तो पछतायेगा, दुखपायेगा ।

ज्ञान— तुम्हारी क्या मजाल जो तुम मेरा एक बाल भी बाँका कर सको । ऐ दुराचारियों कुमार्ग गामियों ! मैं दया, क्षमा आदि अबलाओं में से नहीं हूँ जो तुमसे भयभीत होकर भाग जाऊँ । याद रखो यदि तुम मेरे आड़े आओगे, तो मुँह की खाओगे, क्या तुम नहीं जानते कि मेरा नाम ज्ञान है ।

अहंकार—आ-ह-ह-हा ! अजी हज़रत ज्ञान साहब यह डींग मारना शेखी बघारना किससे सीखे हो ।

ज्ञान— श्रावण के अन्धे को तो हरा ही हरा सूझ पड़ता है जैसी जिसकी भावना होती है वैसी ही उसकी सूझ बूझ भी होती है ।

काम— अच्छा अब तुम जरा होश की पियो ।जितना हम टालते जाते हैं उतना ही आप सिर पर को चढ़े आते हैं

क्रोध— देखो अब तुम यहाँ से भाग जाओ, नहीं तो तुम्हारे हाड़ और मांस से अपनी क्षुधा को मिटायेंगे । तुम्हारे गर्म गर्म लहू से अपनी प्यास को बुझायेंगे ।

ज्ञान— तुम से ऐसी ही आशा है। राक्षसों का और काम ही क्या है। मैं अपना हाड़, चाम, लहू, मांस सब कुछ तुम्हें देने को तैयार हूँ, पर तुम्हें यह प्रतिज्ञा करनी होगी कि हम आज से किसी प्राणी को न सतायेंगे, किसी का जी न दुखायेंगे।

लोभ— यह मिथ्या कलंक क्यों हमारे सिर लगाते हो—

हम किसी को नहीं सताते हैं लोग स्वयम् हमें अपनाते हैं।
जब लोग हमें अपनाते हैं तब हम भी उनके हो जाते हैं॥

ज्ञान— छलियों का यही काम है।

ऊपर वह प्रीत दिखाते हैं अन्दर छल तीर चलाते हैं।
जिस दम ग़ाफ़िल पाजाते हैं सब रहा सहा ले जाते हैं॥

क्रोध— बेकार बकवाद से क्या हाथ आयेगा।

कभी देखा है धीमी आग से लोहा पिघलता है।
मनाओ प्यार से बालक को तो दूना मचलता है॥
हो कोड़ा हाथ में तो बैल घोड़ा रथ में चलता है।
कभी देखा है सीधी उंगलियों से घी निकलता है॥

अहंकार—यह सीधी तरह मानने वाला नहीं है।

हम को भी मनाने की जरूरत नहीं है॥

काम— हम पाँच हैं यह एक क्या इसकी चलेगी।

हमारे आगे इसकी क्या दाल गलेगी॥

❀ गाना ❀

ज्ञान— अरे नादानों क्या सूझी तुम्हें सब को दिखा दूँगा।
मैं सारी शान शेख़ी खाक में सब की मिला दूँगा॥

अगर तृणके निकर बनकर यहाँ पर तुम जो आओगे।
मैं बन पावक की चिनगारी इसे पल में दहा दूँगा॥
अगर दीवाल तुम रज की खड़े होजाओ बन कर के।
तो जल के एक रेले से मैं तुम सब को बहा दूँगा॥
अगर मद मत्त गज बन तुम मेरे सन्मुख जो आओगे।
तो पैनी धार अङ्कुश को से वश में तुम को कर लूँगा॥
अगर दल बाँध राक्षस बन जो दौड़ो तुम मेरे ऊपर।
सुदर्शन चक्र बन 'हरि' का तुम्हारा गर्व हर लूँगा॥

अहंकार—अच्छा जब तुम्हारा यहाँ तक विचार है तो हम को भी कब इनकार है जाओ हमारा बल पराक्रम देखो और अपना दिखाओ। (सब का जाना)

(दूसरा दृश्य)

[काम क्रोध आदि की सभा]

काम— इस दुष्ट ज्ञान ने तो हमारा सब करा धरा ही चौपट कर दिया। यदि इसके मान का मैंने मर्दन न किया तो मेरा नाम काम ही नहीं।

क्रोध— जिस दम चढ़ेगा, आके यह मेरी घात में।
तोड़ूँगा इसके सर को मैं एक ही लात में॥

लोभ— आखिर इस ने हमें समझा ही क्या, दो चार गिने चुने भिकारियों के अतिरिक्त कौन इन का हितकारी है जिस के बल पर इन्हों ने हमीं से शत्रुता धारी है।

मोह— यह है क्या ? सारा संसार, चर, अचर हमारे चक्र में घूम रहा है।

अहंकार—अच्छा जो होना था सो हुआ अब आगे के लिये युक्ति सोचना चाहिये। यदि यह हम लोगों को इसी तरह परास्त किया करेगा तो शीघ्रही वह दिन देखना नसीब होगा कि सारे संसार के हृदय से हम लोगों का साम्राज्य ही उठ जायेगा, यह हरा भरा बाग़ सहज ही में उजड़ जायगा इस लिये भाइयों ! पूरे प्रयत्न से पापी ज्ञान का मुक़ाबला करना चाहिये।

लोभ— हाँ यह तो निश्चय हो ही चुकाहम उनको शीघ्र मिटायेंगे।
हैं कौन बली जो सर्व प्रथम जा रण में हाथ दिखायेंगे ॥

मोह— मेरी सलाह में सर्व प्रथम, रण में कौशल काम दिखायेंगे।

अहंकार—आप भी कहिये अपना विचार।

काम— मैं हूँ सर्वथा तैयार, पर मेरा और भी है एक विचार।

लोभ— भला वह क्या।

काम— हैं दो हितैषी और मेरे उन को भी सूचित करना है।
संग्राम में जाने से पहिले उनकी सहायता लेना है ॥

मोह— मेरे विचारमें आप का आशय, अज्ञान और छल से है।

काम— हाँ, हाँ ! वह दोनों ही मेरे हितैषी हैं उन का मुझ को पूरा बल है।

क्रोध— सूचना दे दो सूचना पाते ही वे आप चले आयेंगे।

काम— कौन सूचना लेकर जायेगा है यह ही तो बस सोच मुझे।
वे एक जगह मिलते ही नहीं बस यह ही है संकोच मुझे ॥

—

मोह— इसकी चिन्ता न करें आप मैं उनको ढूँढ निकालूंगा।
जहाँ कहीं भी होंगे वे दोनों संदेश उन्हें दे आऊंगा॥

क्रोध— अति उत्तम।

काम— अच्छा भाइयों आज की सभा विसर्जित की जाती है और आज से हम सब का यही कर्तव्य है कि जिस तरह बने इस दुष्ट ज्ञान का सर्व नाश करें।

क्रोध— अवश्य २ अपना यही कर्तव्य है और जो कर्तव्य पथ से गिरे उसे धिक्कार है।

(तीसरा दृश्य)

(ज्ञान, दया, क्षमा, आदि की सभा)

❀ गाना ❀

ज्ञान—दुर्मति परे हट क्यों नहीं जाय॥ टेक॥
नित उठ तू तो पाप कमावे, दौड़ दौड़ नित कुसंग में जावे,
भगवत् भजन न तोहि सुहाय॥ दुर्मति॥
नश्वर विश्व यह सबजग जाने, भ्रमवश जीव फिरें भरमाने,
कपटी व्यर्थ ही जन्म गँवाय॥ दुर्मति॥
जीवन ज्योति क्षीणती जावे, भोग विलास सदा मन भावे,
ठगनी सब को रही है नचाय॥ दुर्मति॥
जो भवसागर तरना चाहो, 'हरि' चरणों में प्रीत बढ़ाओ,
जो शान्ति सुधा बरसाय॥ दुर्मति॥

दया— पुत्र ज्ञान तुम्हारा कल्याण हो, यदि कल्ल तुम न होते तो वे दुष्ट राक्षस न जानें हमारी क्या गति बनाते।

क्षमा— इन पापी पातकियों ने तो हमें नष्ट करने ही की ठान ठानी है।

शान्ति— मेरा तो इन के भय से कलेजा ही सूखा जाता है। न जानें यह दुष्ट कब क्या उपद्रव कर उठावें।

ज्ञान— देवियों! आप ठीक ही कहती हैं। वे दुष्ट हमारे नाशके लिये अनेकों जाल फैलायेंगे, अपनी करनी में कोई कसर न उठायेंगे, जहाँ तक बनेगा हमीं को सतायेंगे।

दया— बेटा तुम्हें हमारे लिये बड़ा कष्ट उठाना पड़ेगा।

ज्ञान— मुझे विशेष कोई कष्ट न होगा।

क्षमा— क्यों?

ज्ञान— यों कि मैं उस समय अकेला था, तब ही वह दुष्ट आप का कुछ न बिगाड़ सके। अब तो मेरे मित्र महाराज शील, संतोष, धैर्य, वैराग्य और विवेक हमारे साथ हैं जो आपकी सहायता यथार्थ रूप से किया करेंगे।

दया— तो आप कृपया इन सब महानुभावों से हमारा परिचय भी तो करा दें।

ज्ञान— यह कथन आपका यथार्थ है। तो देखिये:—

शील की ओर संकेत करके—

सुख के सागर शील यह जहां कहीं पहुँचे जाय।
तीन लोक की सम्पदा सहजहि में मिल जाय॥

संतोष की ओर संकेत करके—

मिले जो आ संतोष धन दीजो इन पर वार।
जेते धन संसार के छण में हुई हैं छार॥

धैर्य की ओर संकेत करके—

धैर्य आये धीरज बंधे धीरज से सब होय।
अड़ी पड़े पर धैर्य ये सब कुछ देहैं तोय॥

वैराग्य की ओर संकेत करके—

यह महाराज वैराग्य हैं बचा लेते तत्काल।
खड्ग को आता देख कर अड़ा देत हैं ढाल॥

विवेक की ओर संकेत करके—

यह महाराज विवेक हैं लो इन को पहचान।
भले बुरे की इन्हीं को सदा रहे पहचान॥

शान्ति— इन महानुभावों का तो यह मत है कि हम किसी को पीड़ा न पहुँचावेंगे तब उनके प्रबल प्रहार से यह रक्षा कैसे कर पावेंगे। उन को यह क्या दंड देंगे इस की हम सब को चिन्ता है।

ज्ञान— पापी के संग पापी का पाप, मौतकी घड़ियां गिनता है।

दया— हमारा क्या कर्तव्य है ?

ज्ञान— दया करना।

क्षमा— और मेरा।

ज्ञान— क्षमा करना।

शान्ति— और मेरा।

ज्ञान— शान्ति रहना।

दया— क्या यह सद् भावनायें उन दुराचारियों के हृदय पटल पर अपना कोई प्रभाव डाल सकेंगी, अथवा उन्हें पराजित कर सकेंगी।

ज्ञान— अवश्य ही!

❀ गाना ❀

संतोष— जो २ यह सितम हमपै सितमगार करेंगे।
हम शौक़ से सह लेंगे न इनकार करेंगे॥
आशा लता जो सूख गई है निराश से।
उसही की जड़को सींच कर सरशार करेंगे॥
दुष्टों नेजो सर अपना उठाया है हर तरफ़।
बुद्धि से इन्हें युक्ति से बेकार करेंगे॥
पहले फंसा के जाल में करते हैं बुरा हाल।
इनके कुकर्मों से 'हरी' हुशियार करेंगे॥

(चौथा दृश्य)

[काम का अपने भवन में संग्राम की तय्यारी करना और पुष्प बांण का निरीक्षण करना।]

काम— नोकीले मेरे बांण यह तो सन्नन सन्नन चलते॥
चोटीले मेरे बांण यह तो सन्नन सन्नन चलते।
बड़े बड़े योगी,यती,सती सब इनके आगे ढलते॥
जब रमणी के नूपुर पग में रुनझुन २ बजते।
ध्यानी ज्ञानी योगी जन भी उलटी सांसें भरते॥
तीखी मार मेरे बाँणों की बिजली सी जब लपके।
'हरी' की माला छोड़ सभी जन मेरी माला जपते॥

[अज्ञान और छल का प्रवेश चोबदार का खबर करना]

चोबदार—सरकार ! महाराज अज्ञान और छल पधारे हैं ।

काम— उन्हें आदर सहित बुला लाओ ।

चोबदार—पधारिये सरकार ! महाराज आपकी बाट देख रहे हैं ।

[दोनों का काम भवन में प्रवेश]

अज्ञान— (कामसे) सरकार आज किसपर रुष्ट हैं जो पांचों शर सन्धान करना चाहते हैं ।

काम— अजी उसी ज्ञान का बलिदान किया चाहते हैं ।

अज्ञान— उस ने तो मुझे भी बड़ा हैरान कर रक्खा है ।

काम— इससे ज्ञात होता है कि आप मेरी भली प्रकार से सहायता करेंगे ।

छल— क्या इस में भी कोई संदेह है ।

काम— नहीं ! आप लोगों का मुझे पूरा भरोसा है अब सोच यह है कि किधर से हाथ साफ़ किया जावे ।

अज्ञान— मेरा विचार तो यह है कि पहले उन स्त्री पुरुषों पर प्रहार किया जावे जो हम से विमुख होकर ज्ञान को अपना जीवनाधार समझते हैं ।

काम— इस से आप का तात्पर्य्य क्या है ।

अज्ञान— क्या मतलब समझ में नहीं आया ।

काम— नहीं ।

अज्ञान— तो सुनिये दम नाम का एक पुरुष है, और सुबुद्धि नाम की एक उसी की स्त्री है, जिन के यहां ज्ञान जाकर

अपना अड्डा जमाता है। वेही दोनों अपने उपदेशों से हम लोगोंके प्रति घृणा व ज्ञान से प्रीत करना बताते हैं। यदि उनका अन्त कर दिया जावे तो ज्ञान स्वयम् ही नष्ट हो जाता है।

काम— बलिहारी इस बुद्धि की, बात तो बड़े ही पते की कही।

छल— फिर देरी क्या है कार्य क्रम जारी कीजिये।

[काम का ताली बजाना, मोहिनी का अपनी चार सखियों के सहित गाते हुऐ आना]

❀ गाना ❀

मोहिनी-हम वारी, महाराजा बलिहारी, लीला तुम्हारी न्यारी २॥
चर अचर सब तुम्हारे वशमें, तुम ही सबके हो सिरताज।
तुम्हारे दमसे दीख रहा है, जन वैभव और सुख के साज॥
बलिहारी बलिहारी लीला तुम्हारी न्यारी २॥ हमवारी॥
कहिये महाराज क्या आज्ञा है।

काम— मेरा तुम को यह आदेश है कि तुम छल के साथ दम के आश्रम को जाओ और उन से अपना सम्बन्ध रचाओ अपनी कला कौशल से उन्हें अपने जाल में फंसाओ और मैं अज्ञान के साथ उन्हीं की स्त्री सुबुद्धी के पास जाता हूँ और उसे अपने जाल में फँसाता हूँ।

मोहिनी— बात तो ठीक है, जब जड़ ही कट जावेगी तो पत्ते फूल फल, गोंद, छाल, लकड़ी कहां से हाथ आवेगी।

काम— अच्छा भाइयों तो अब प्रस्थान करो।

(सब लोग) जै हो काम कला धारी की।

(पांचवाँ दृश्य)

[कॉमिक]

[रास्ता जंगल व पहाड़, छल के साथ मोहिनी तथा उसकी सखियों का नज़र आना]

मोहिनी— उफ़ ! अब तो एक क़दम भी आगे नहीं भरा जाता। पहाड़ की चढ़ाई से धूप की गरमाई से मन व्याकुल हो रहा है

छल— न घबड़ाइये, न घबड़ाइये, वह देखिये सामने पेड़ों के झुरमुट में एक छोटा सा उद्यान है। वहीं समीप ही एक स्वच्छ जल का झरना बह रहा है। झरने के किनारे तरह २ के फल फूलों के वृक्ष व झाड़ियाँ उद्यान की शोभा को बढ़ा रहे हैं। और आप लोगों के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

भामिनी—क्या आप ठीक कह रहे हैं या योंही हमारी सखी को झूठा प्रलोभन देकर बहका रहे हैं।

छल— आप इस में किञ्चित मात्र भी संदेह न करें।

चम्पा— चलो सखी जहाँ आप ने इतना कष्ट उठाया है वहां थोड़ा सा और भी सही।

[धीरे धीरे सब झरने के किनारे पहुंच जाते हैं। थोड़ी देर सब साये में बैठ कर सस्ताते हैं फिर सब सखियां झरने के जल में स्नान करने के साथ साथ अठखेलियां भी करती जाती हैं इन को अठखेलियां करते देख कर छल का मन चंचल हो उठता है]

वह आप ही आप अपने मन में कहता है।

छल— तरह तरह के फूल मनोहर देख देख फुलवारी में।
मन भौंरा रस चखता डोले उड़ उड़ क्यारी क्यारी में ॥
रूप रस गंध लिये सब बैठीं नई नई छटा न्यारी में।
उठ मन अब तू भाग लगा चल भोजन परसा थारी में ॥

अहा! कैसा मनोहर दृश्य है। कैसी सुन्दर छवि है, जिस के लिये मन व्याकुल हो रहा है। अब थोड़ी ही देर में एक जाल बिछाऊँगा और इन सब पंछियों को उस में फँसाऊँगा।

[मोहिनी आदि का स्नान करके लौटना]

छल— आप लोग इन वृक्षों से अपनी रुचि के अनुकूल फल तोड़ के खायें, तब तक मैं भी स्नान कर आऊँ।

मोहिनी— अवश्य, जाइये और राह की तपन को बुझाइये।

[छल का स्नान करने जाना और मन ही मन बड़बड़ाना]

छल— मोहिनी! मेरे हृदय की रानी, क्या तुझे खबर है कि मैं तुझे कितना चाहता हूँ। मेरे दिल की दुनियाँ तुझ बिना सूनी थी। बहुत दिनों से अवसर की प्रतिक्षा कर रहा था। अब वह अवसर शीघ्र ही आकर भाग्य का तारा चमकाने वाला है।

[छल स्नान कर के मोहनी आदि के सन्मुख पहुंचता है]

छल— अच्छा सुनो एक बहुत अच्छी काम काज की बात मेरे ध्यान में आई है।

मोहिनी— ज़रा हम भी तो सुनें।

छल— एक शिकारी शिकार खेलने से पहले अपना निशाना ठीक तौर से साधता है। जब वह अपने फ़र्ज़ी निशाने

पर अचूक वार करने लग जाता है तब वह मैदान में शिकार खेलने जाता है। कहो यह बात तो ठीक है न?

कामिनी—ठीक और बिलकुल ठीक—हाँ अब आगे चलो।

छल— आप इस समय दम के मन पर अधिकार प्राप्त करना चाहती हैं। जो सहज काम नहीं है।

चपला— फिर क्या किया जावे।

छल— मैं थोड़ी देर के लिये 'दम' का पार्ट अदा करता हूँ और आप सब मुझे अपना फ़र्ज़ी शिकार समझ कर अपने हथियारों का प्रयोग मुझ पर करें यदि आप मेरे मन को वश में कर सकीं तो मैं समझ लूँगा कि आपको वहाँ भी विजय प्राप्त होगी अन्यथा नहीं। ऐसा करने से दोपहरी के समय में मनोरंजन भी हो जावेगा और आप लोगों का निशाना भी सध जावेगा।

कामिनी—हाँ यह तो बात आपने कुछ पते की कही।

छल— तो मैं वहाँ पेड़ों के झुरमुट में जाकर ध्यान लगाता हूँ, और आप लोग अपनी कला की परीक्षा मुझ पर करें।

मोहिनी—अच्छी बात है।

[छल झुरमुट की ओर बढ़ता जाता है और आपही आप कहता जाता है]

छल— मुझ सा स्याना और कौन हो सकता है। देखो तो मेरी करामात कि एक ही वार में पांच शिकार किये। ये भोलीभाली यारों के हतखंडों को क्या समझ सकतीं हैं,

❀ गाना ❀

मैं छल बल कारी वह सरदार, बचना जिस से है दुशवार।
मैं नटखट कपटी वह मक्कार, कोई न पाता मेरा पार॥
भेद 'हरी' नहीं पाता मेरा मूर्ख हो या चतुर घनेरा।

जिस द्रुम पंछी करे बसेरा, तमक तमाचा देता मार ॥

[ज्ञान का प्रवेश]

ज्ञान— नहीं नहीं ! यह तुम्हारी भूल है, जो तुम ऐसा सोचते हो । किन्तु यूं कहो कि अपने गिरने के लिये आप ही गढ़ा खोदते हो ।

छल— ऐं ! तुम यहाँ कहाँ, यह तो हमारे आमोद प्रमोद का स्थान है, तुम्हारा यहाँ क्या काम है ।

ज्ञान— डसेगी तुझको यह नागिन तू करता प्यार है जिनको ।
वह है फाँसी का एक फन्दा समझता हार है जिनको ॥

छल— मैं तुम्हारे उपदेश सुनना नहीं चाहता ।

ज्ञान— मैं तुम्हारे भले की कहता हूँ ।

छल— अपनी ज्ञान चरचा अपने ही पास रहने दो । या उसको दो जो इसका तलबगार है, मुझको नहीं दरकार है ।

ज्ञान— कर्म कर या कुकर्म कर यह तेरा अधिकार है ।
पर कुकर्मों की सजा देता सदा करतार है ॥

छल— कहना तेरा बेकार है ।

ज्ञान— मेरा भी क्या सरोकार है ।

[ज्ञान का अन्तर्धान हो जाना]

छल— देखो तो इस मूर्ख को कि मुझ ही पर रंग जमाने आया था ।

[मोहिनी के विचार]

मोहिनी—देखो तो बहिन कामिनी ! यह छल कितना स्याना बनता है । हमीं को छलना चाहता है, हमीं पर रङ्ग चढ़ाता है, क्या हम तेरी इतनी भी चाल नहीं समझतीं ।

अरे मूर्ख ! हम स्त्रियाँ, पुरुषों के मनोभावों को भली प्रकार से समझती हैं । नजर से नजर मिलते ही फ़ौरन ताड़ लेती हैं कि कौन कितने पानी में है । पर हमको तो मनोरंजनार्थ तुझ जैसे मूर्ख की परम आवश्यकता थी । तुझ को हम अपने विलास के कुण्ड की आहुती देंगी, तेरे रूप रस को कुछ काल में चूस कर छूँछ बना देंगी, और तेरे ही बिछाये हुये जाल में हम तुझे फंसायेंगी और आप मजे उड़ायेंगी ।

चपला— बहिन मोहिनी ! अब क्या करना होगा ।

मोहिनी—इस छलिया को छलना होगा । इसको अपनी चालों में फंसायेंगी । इसे अपने विलास की सामिग्री बनायेंगी सब बारी २ से इस के रूप रस को पी जायेंगी छूँछ रह जावेगी तो फेंक बहायेंगी ।

कामिनी—बहुत ठीक ।

[सब पेड़ों की झुरमुठ की ओर बढ़ती हैं व नाचती गाती हैं]

[सब का गाना]

तुम हो बड़े बेपीर मुझ को मालूम नहीं था ॥
मन को लुभाते क्यों हो, आँखें चुराते क्यों हो ।
दिल है मेरा दिलगीर मुझको मालूम नहीं था ॥
मुख से न बोलो चाला, क्यों 'हरी' न देखो भालो ।
क्या है मेरी तक़सीर, मुझ को मालूम नहीं था ॥

छल— ऐ सुन्दरियों ! तुम कौन हो, कहां से आई हो. और किधर जाने का विचार है ।

मोहिनी—हे महापुरुष हम देव लोक की अप्सरा हैं। आज वन क्रीड़ा हेतु इधर आ निकली हैं।

छल— ऐ सुन्दरियों! तुम ग़लती पर हो, जो इस परम पावन तपो भूमि को क्रीड़ा केन्द्र बनाया चाहती हो।

कामिनी—क्या आप नहीं जानते कि संसार परिवर्तन शील है। यहाँ का कोई नियम, कोई वस्तु, कोई चीज़ न सदा एक सी रही और न रहेगी।

चम्पा— तभी तो हमारी सखी इस तपोवन को क्रीड़ावन बनाया चाहती हैं।

चपला— इतना ही नहीं किन्तु वन वासियों को, तप धारियों को विलासियों की रूप रेखा दिया चाहती हैं।

छल— तुम्हें क्या हो गया है, यह सब तुम क्या कह रही हो।

❀ गाना ❀

मोहिनी—मोरे बारे साँवरिया हाँ हाँ रे।
तोरी प्यारी सुरतिया हाँ हाँ रे॥
प्यारे हमारे दुलारे हो तुम, आँखों के तारे न्यारे हो तुम।
प्रेम भिकारी, हूँ तुम पै वारी, पूजूं मुरतिया हाँ हाँ रे॥
'हरी' हृदयसे लगाऊँ तुम्हें, जीवन आधार बनाऊँ तुम्हें।
जोड़ी तुम्हारी, हमारी, है न्यारी, लागी नज़रिया हाँ हाँ रे॥

छल— अरे भगवान्! यह मैं क्या देख रहा हूँ, क्या सुन रहा हूँ, देव लोक की अप्सरा और इतनी निर्लज्ज। किसने नज़र लगाई, कब लगाई, कहाँ लगाई, भाई रे भाई, नारायण, नारायण, नारायण!!!

❀ गाना ❀

चंचल चटकीली नार ॥
डोले, फिरे, इतराई, इठलाई, बलखाई,
निपट निलज कहा जाने हित का सार,
अति ही गंवार ॥
चंचल चटकीली नार ॥

मोहिनी—कहो, कहो, जो जी चाहे सो कहो। मैं सब कुछ सुनूंगी तुम्हारी ही खातिर तो मैंने देव लोक छोड़ के मर्त्य लोक स्वीकार किया है, यह बातें तुम्हारे मुख से बड़ी प्रिय लगती हैं।

छल— मुझे क्षमा करो।

चपला—क्षमा करना तो हमारी सखी ने पढ़ा ही नहीं।

मोहिनी—तुम मेरी एक ही बात स्वीकार करो।

छल— वह कौन सी बात है।

❀ गाना ❀

मोहिनी—आके संभालो प्रीतम प्यारे,
मोरे कलेजे पीर है, पीर है, पीर है ॥
तुम बिन मोकू कछु न सुहावे,
निशदिन मोरा जिया अकुलावे,
तुम ही बताओ कैसे धारूँ,
अपने मन में धीर रे, धीर रे, धीर रे ॥
नैन पूतरी तुम्हें बिठाऊँ,
चरन धरो तो पलक बिछाऊँ,

आज दिखादूँ 'हरी' तुम्हें मैं,
अपना कलेजा चीर के, चीर के, चीर के ॥

[मोहिनी कटार निकाल कर अपने कलेजे में भोंकने का अभिनय करती है। छल झपट कर कटार हाथ से छीन कर दूर फेंक देता है। और उसे उठा कर घनी झाड़ियों में जा छिपता है।
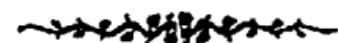
(छटा दृश्य)

[स्थान मदन वाटिका। छल मोहिनी तथा उसकी सखियाँ बैठी बातें कर रही हैं]

छल— अब गंगा घाट की ओर चलना चाहिये। दम के गंगा स्नान का समय निकट आता जाता है।

कामिनी—देरी तो आप ही कर रहे हो, हमारी कहो को टाल रहे हो।

छल— तुम तो मर्द से औरत बनने को कहती हो।

मोहिनी—तो बुराई क्या करती हैं, जैसे काम सधे साधना चाहिये

छल— तुम्हारी मर्ज़ी (छल साढ़ी पहिन लेता है) कहो अब कैसी जँचती हूँ।

कामिनी—पूरी विलासनी जँचती हो।

[सब सखियाँ गङ्गा घाट की ओर चल देती हैं। गंगा के मार्ग से कुछ फ़ासले पर झाड़ियों की आड़में छिपकर बैठ जाती हैं दम बगल में मृगछाला दबाये खड़ाउओं को चटकाते चले जा रहे हैं]

चपला—क्यों बहिन मोहिनी ! यही दम हैं जो खड़ाउओं पर जा रहे हैं।

मोहिनी—हैं यही वह ज्ञानी महापुरुष जिनका हम ज्ञान छुड़ायेंगे।
गंगा स्नान कर आने दो तब तक हम जाल बिछायेंगे॥
जाल फंसे उपरान्त इन्हें, नौ रंग दिखाकर सृष्टी के।
आधीन करेंगी हम इन को ता थेई थेई नाच नचायेंगे॥

विलासनी- अच्छा तो अब देरी न करो।

चपला— क्या रंग जमाया जावे ?

चम्पा— मेरी सलाह तो यह है कि किसी हरियाले वृक्ष के नीचे झूला डाला जावे।

कामिनी—बहुत खूब।

[सब का गाना]

हाँ आँ चलो झूला डालें अलबेलियाँ॥ टेक॥

चम्पा— सब सब सखियाँ,

चपला— डार गरे बहियाँ,

कामिनी—चुन चम्पे की कलियाँ हा,

भामिनी—हार बनावें 'हरी'

विलासनी-गजरे गंधावें,

मोहिनी—बाग में करेंगे रंग, रेलियाँ। हाँ आँ चलो॥

[दम का गंगा स्नान करते नज़र आना, इन सब के गाने की आवाज़ से चौंक कर, एँ! आज इस निर्जन बन में यह सुरीली तानें कहां से आ रहीं हैं चल कर देखना चाहिए]

चम्पा— लो सखी झूला तो तय्यार है।

मोहिनी—फिर क्या, झूलने ही की बहार है।

❀ सब का गाना ❀

झूला झूलो सम्हाल के कहीं आँचल न उरझे ॥
सुन सुन री मोरी संग की सहेली,
झोटा देना सम्हाल के, कहीं आँचल न उरझे ॥
अँखियाँ हमारी हैं लजवन्ती,
लाज से झप झप जायें री, कहीं आँचल न उरझे ॥
तोता मैंना 'हरी' डालों पै बैठे,
मीठी मीठी तानें सुनायें री, कहीं आँचल न उरझे ॥

कामिनी—हे सखी, तुझे तो सच मुच ही मस्ती चढ़ आई।

चपला— लता लता पर देखो सखियों कैसे भ्रमर घूम रहे हैं।
मोहिनी सूरत पै तेरी जैसे लटों के बादल झूम रहे हैं॥

[दम का प्रवेश, मोहिनी को झूला झूलते छोड़के सबका भाग जाना। मोहिनी का मूर्छित होकर झूले के नीचे गिर पड़ना]

दम— अरे यह कैसा काण्ड है! इस के साथ वाली सब कहाँ को चली गईं? यह कौन है यहाँ किस हेतु से झूला डाला है, यह सब बातें मैं किस से पूछूँ, पहले इसकी सखियों को ढूँढूँ अथवा इसी को होश में लाने की युक्ति करूँ। इसकी सखियाँ यहीं कहीं आस पास में छिप रही होंगी उनको पीछे देखा जायगा पहले इसको होश में लाने की युक्ति करूँ।

[मुंह पर गङ्गा जल के छींटे देने पर भी मोहिनी का होश में न आना। फिर उसकी सखियों का ढूँढ़ना मगर किसी का न मिलना।]

हे भगवान ! यह कैसी समस्या है मैं क्या करूँ, कुछ समझ में नहीं आता। यदि मैं इसको यहीं छोड़कर चला जाऊँ तो रात्रि का समय निकट है कोई न कोई हिंसक जीव इसका कलेवा कर लेगा। इस लिये इसे मुझे अपने आश्रम को ही ले जाना पड़ेगा। बस सिवाय इसके और कोई चारा ही नहीं।

[दम का मोहिनी को उठाकर अपनी कुटियाकी ओर चलदेना]

(आप ही आप)—अरे यह क्या ! मेरे शरीर में कामाग्नि क्यों प्रचंड होती चली जाती है। जब से मैंने इस स्त्री को अपनी गोदमे लिया है, तबसे न जाने कैसी २ भावनायें आ आ कर मेरे मन को भ्रमा रही हैं। जिन बातों का कभी स्वप्न में भी संकल्प न होता था आज वे ही बातें जागृति में मुझे सता रहीं हैं। इसका क्या उपाय है ? मेरी समझ में सिवाय इसके और कोई उपाय नहीं, कि मैं इस स्त्री को हाथ न लगाऊँ। इसको यहीं छोड़ कर चला जाऊँ। जब मुझ जैसे वैरागी पुरुष का मन स्त्री के स्पर्श मात्र से कलुषित हो गया तो साधारण जीवों को क्या गिनती। भलाई इसी में है कि पर नारी से सदा दूर रहे।

[दम मोहिनी को वहीं लिटाकर आगे बढ़ता है]

[दया देवी का प्रवेश]

दया— यह तेरा कर्तव्य नहीं जो एक असहाय अबला को इस प्रकार से जंगल मे पशु पक्षियों का कलेवा बनने को

छोड़ जाय। अपने नाम और गुण का स्मरण कर। यदि तू इस को इस प्रकार छोड़ जावेगा तो अपने दम नाम पर बट्टा लगावेगा। योद्धा वही है जो रण में पीठ नहीं दिखाता। तू दम है, और तुझ में इन्द्रिय दमन की शक्ति है। फिर इस हाड़ मास की पुतली से किस लिये भयभीत होता जाता है।

दम-- क्षमा कीजिये माता, मुझ से बड़ी भूल हुई। आप ने मुझे ऐसे समय में चेतावनी दी जब कि मैं कर्तव्य भ्रष्ट हो रहा था इस का आपको कोटानुकोट धन्यवाद है।

❀ गाना ❀

मुझे क्यों तू ने उरझाया॥
तू मुझ को मिल गई है जब से,
कामातुर मैं हुआ हूँ तब से।
क्यों मेरे भोले भाले मनको तूने बहकाया॥
हट जा परे नव यौवन वारी,
छुअत हुई क्या दशा हमारी।
अङ्ग अङ्ग में कामतुम्हारे मुझको दरसाया॥
'हर्ष' जो चाहो अपना जीवन,
पर नारी है सुख की वैरिन।
चतुरंगी सेना साथ काम ले मुझ पर चढ़ आया॥

रे दुष्ट मन! आज तूने मुझे भी अछूता न छोड़ा। नहीं यहभी मेरी भूल है, जो मैं तुझे दोष देता हूं। तेरा स्वभाव तो भौंरे की तरह है, जहाँ कोई खिला फूल देखा

कि तू उस पर जा मँडराया उस समय तुझे अनुचित और उचित का ध्यान नहीं रहता। अनुचित और उचित तो उन्हें देखना है जिनके पास हृदय है।

[दम फिर मोहिनी को उठा लेते हैं और अपने आश्रम की तरफ़ चल देते हैं। आश्रम में पहुँचकर दम मोहिनी को फूंस की शय्या पर लिटा देते हैं। थोड़ी देर बाद मोहिनी की मूर्छा छूट जाती है और वह आँखें खोल देती है।]

मोहिनी—(आश्चर्य से) मैं इस समय कहाँ हूँ ?

दम— आप इस समय दम की कुटिया में हैं।

मोहिनी—प्रभो ! मैं इस समय यहाँ कैसे आई, और मेरे साथ की सखियाँ सब कहाँ को चली गईं ?

दम— मैं ने तुम्हारी सखियों को देखा तो जरूर था पर वे सब कहाँ पर लोप हो गईं यह मैं नहीं कह सकता। तुमको झूले के नीचे मूर्छित पाया, कोई हिंसक जीव तुम्हें हानि न पहुँचावे इस भय से यहाँ उठा लाया।

[मोहिनी दम पर टटोलने वाली निगाह डालती है]

मोहिनी—अब मुझे क्या आज्ञा है ?

दम— तुम स्वतंत्र हो जो जी चाहे करो और जहाँ जी चाहे जा सकती हो।

[मोहनी यह सोच कर कि मेरा इस पर अभी तक कोई प्रभाव नहीं पड़ा, कहती है।]

मोहिनी—प्रभो ! जहाँ आप ने मेरे ऊपर इतनी कृपा की है वहाँ आप मुझे अपने चरणों से भी जुदा न कीजिये।

मोहिनी—मैं अपने आश्रय दाता, अपने जीवन दाता की सेवा करके कृतार्थ हुँगी ।

दम— मैं किसी से सेवा कराने योग्य नहीं किन्तु मेरा ही काम सेवा करना है । यदि मैंने आप की सेवा की तो अपना कर्तव्य पालन किया । इस में आप पर कौनसा एहसान किया ।

मोहिनी—बड़ों की बड़ी ही बातें हुआ करती हैं मैं आप से अनुरोध करके कहती हूँ ।

मेरी सेवा को नाथ स्वीकार कीजिये ।

मुझे अपने चरणों में स्थान दीजिये ॥

दम— सेवक को सेवा स्वीकार करने का अधिकार कहाँ है ?

मोहिनी—आप को सेवक कौन कहता है ।

दम— कोई कहे या न कहे पर मैं तो सेवक ही हूँ ।

मोहिनी—अपने मन से ।

दम— अपने मन से और अपने तन से ।

मोहिनी—अपने तन मन पर मुझे भी अधिकार है, इस लिये मैं भी आप की सेविका हुई अपने तन से और अपने मन से ।

❀ गाना ❀

गंगा किनारे चले चलो साजन हम तुम कुटी बनायें ।
प्रेम लहर में अपना जीवन लहर लहर लहरायें ॥
तुम बन अईयो स्वाँती साजन मैं सिपिया बन जाऊँ ।
दोनों मिलकर मोती बन कर जग को चमक दिखायें ॥
'हरी' तुम भौंरा बन अईयो, मैं जल सुत बन जाऊँ ।
सुख की निंदिया सो कर साजन हृदय तपन बुझायें ॥

दम— (स्वतः) मान न मान मैं तेरा महमान यह तो जबरदस्ती गले पड़ना चाहती है। (प्रकट) सुनती भी हो

मोहिनी—क्या कहते हो?

दम— स्त्री के लिये सिवाय पति के दूसर की सेवा करना पाप है।

मोहिनी—सो तो मैं अभी कुवाँरी हूँ मेरा विवाह अभी तक किसी के साथ हुआ ही नहीं।

दम — मगर मैं तो लाचार हूँ।

मोहिनी—लाचारी काहे की?

दम— मेरे तो स्त्री मौजूद है।

मोहिनी—हुआ करे हर्ज ही क्या है?

दम— यदि तुम हर्ज की सुनना चाहती हो तो सुनो।

जिस तरह एक स्त्री का एक ही पुरुष जीवन आधार है।
उसी तरह एक पुरुष को एकही नारी का अधिकार है॥

मोहिनी—यदि वास्तव में यह बात ठीक है तो लोगों को अनेकों नारियों से क्यों सरोकार है।

दम— यही तो उनका मिथ्या आचार है इसी आचार से व्यभिचार का गर्म बाजार है। जो शरीर ईश्वर के हेतु लगाना चाहिये उस पर काम का अधिकार है। इस काम पिपासा ने अनेकों सद् बुद्धियों को अन्धकार के अंधेरे गार में ढकेल दिया तो क्या तू भी मुझे उसी गार में गिराने आई है। जा, जा, तू यहाँ से चली जा मैं तेरे रूप जाल में फँसने वाला नहीं।

❀ गाना ❀

जगत में जन्म लिया ईश के अपनाने को।
मोहिनी मोह रही मोह में उलझाने को॥
उलझा जो जाल में फिर वह न सुलझने पाया।
नागिनी आई है बन कर मेरे डस जाने को॥
पुरुष वे पुरुष नहीं नारि जिन्हें आसक्त करें।
कामी कुत्ते ही तड़पते हैं तेरे पाने को॥
हृदय पर मेरे सुबुद्धि का हुआ है क़बज़ा।
नहीं है ठौर यहाँ अब तेरे बैठाने को॥
मल-मूत्रकी थैलीहै 'हरी' और न कुछ पास तेरे।
क्यों तू आई है यहाँ मुझ को ही भरमाने को॥

बस देवी बस अब तुम मुझ पर दया करो और जल्दी ही यहाँ से कूच का सामान करो, मैं भर पाया।

मोहिनी—(पैर पकड़ के) अरे निर्दयी इस तरह मुझे न ठुकरा।

दम— [झटके से पैर छुड़ा के चले जाते हैं और मोहिनी वहीं रोती हुई रह जाती है।

(सातवाँ दृश्य)

[कॉमिक]

[अपने बगीचे में छल की स्त्री सरला उदास बैठी है]

❀ गाना ❀

का जानूं कहाँ बिरमाये सजन नहीं आये॥ टेक॥
नित पिया तुम्हारी राह तकत हूँ।
व्याकुल जिया अकुलाये, सजन नहीं आये॥

आओ 'हरी' अब वेग हरो तुम।
विरहा दुख सहा नहीं जाये, सजन नहीं आये॥

[अधम राय का प्रवेश]

अधम— किस की याद में व्याकुल हो रही हो सरले।

सरला— मैंने अनेकों बार तुम को मना किया कि तुम यहाँ न आया करो। पतिव्रता सिवाय पति के दूसरे की ओर ताक भी नहीं सकती।

अधम— ओ भोली भाली रमणी! तू क्या पुरुषों की चाल को समझ सकती है। जितने भी धर्म की मीमांसा करने वाले ग्रन्थकार आज तक संसार में हुए हैं वह सब पुरुष ही तो थे।

सरला— अच्छा तब?

अधम— उन पुरुषों ने पुरुष समाज के लिये कोई ऐसी पाबन्दी नहीं लगाई कि वे स्त्री के मरने के उपरान्त अपना दूसरा विवाह न कर सकें। नहीं नहीं! इतना ही नहीं उनको स्त्री के रहते हुए भी अनेकों विवाह करने की पूर्ण स्वतंत्रता मिली हुई है और बहुत से स्वेच्छाचारी लुक छिप कर इधर उधर नजर भी लड़ाते हैं और हाथ भी मारते है, पर पुरुष समाज को इस पर भी कोई आपत्ति नहीं। यह क्या कोई न्याय है?

सरला— बस जुबान बन्द करो! इन बातों से हमें कोई भी सरोकार नहीं। यह बातें वह सोचें, जिन के पति दुराचारी हों या दूसरे विवाह की तय्यारी कर रहे हों।

अधम— आप अपने पति के बारे में क्या जानती हैं ?

सरला— हमारे पति सुघड़ हैं, सलोने हैं और धर्म-ध्वजाधारी हैं।

अधम— धर्म-ध्वजाधारी या दुराचारी।

सरला— क्या कहते हो दुराचारी ?

अधम— हाँ हाँ दुराचारी और अव्वल नम्बर का दुराचारी।

सरला— तुम्हें इसका प्रमाण देना होगा वरना तुम्हें अपने जीवन से हाथ धोना होगा, बताओ वह इस समय कहाँ हैं।

अधम— वह इस समय मदन वाटिका में मोहिनी की सहेलियों के साथ रंग रेलियां कर रहे होंगे। क्या आप देखा चाहती हैं

सरला— हाँ हाँ उनको मैं ऐसी अवस्था में अपनी आँखों से देखा चाहती हूँ। आप दो घोड़ों का प्रबन्ध करलावें तब तक मैं चलने की तैयारी करती हूँ।

अधम— बहुत अच्छा।

[अधम घोड़े लेने जाता है व सरला अपने मकान को जाती है]

अधम— अब तो अपने पौ बारह हैं। बहुत जल्दी सरला और छल में खट पट कराके अपना उल्लू सीधा कर लूंगा।

[अधम का घोड़े लेकर आना। सरला का रणचण्डी का रूप धारण कर, हाथ में खड्ग, काँधे पर धनुष बाँण लेकर घोड़े पर सवार हो जाना। अधम सरला को देख कर भयभीत हो जाता है।]

अधम— आप जरा देर रुकें, मुझे एक जरूरी काम है, अभी आजाऊँगा।

सरला— यदि एक क़दम भी आगे धरा तो इस तलवार से तेरा सर अलग करदूंगी

अधम— मैं चलने से इन्कार भी तो नहीं करता।

सरला— इन्कार कर के मेरा क्या बिगाड़ोगे, अपनी ही तो जान गंवाओगे।

अधम— न बाबा! मेरी जान ऐसे गंवाने के लिये नहीं है। चलो मैं तुम्हें दिखादूँ। अच्छा यदि मैंने तुम्हें दिखा दिया तो इनाम क्या दोगी?

सरला— तुम्हे खुश कर दूंगी।

अधम— चलिये—

[अधम आगे २ और सरला पीछे २ तेज़ी से घोड़े बढ़ाये चले जा रहे हैं। कुछ दूर चलने के उपरान्त अधम रुक जाता है व सरला भी रुक जाती है।]

सरला— रुक क्यों गये क्या वह जगह आगई?

अधम— घोड़ों की टापों से वे सावधान हो जावेंगे इस लिये यहाँ से पैदल छिपते हुए चलेंगे अब वह जगह दूर नहीं है।

सरला—अच्छी बात है।

(दोनों ने अपने २ घोड़े लम्बी रस्सी से बांध दिये। अपने आपको छिपाते हुए उस स्थान तक पहुंच गये जहाँ से मदन वाटिका में होने वाली करतूतों को भली प्रकार से देखा जासकता था।)

अधम— लो पति देव की करतूतों को भली प्रकार निहारलो।

(सरला और अधम खड़े २ देख रहे हैं)

❀ गाना ❀

छल— छवि छिन २ अधिक सुहाये ॥

चपला सी चमके घूम घूम,

मन ताकत, झाँकत, इधर, उधर झकझूम ॥

छवि निहार मैं बलि बलि जाता,
बना हार जब तुम्हें पिन्हाता,
आंख, कान, दाँत, नाक, अंग अंग चरमरात,
दगन कोर लग्न सिहात,
'हरी' झिझकत, सिसकत, कसकत, ससकत आये॥
छवि छिन ....।

सरला— हे भगवन्! तूने यह मुझे क्या दिखाया? ओ पापी पुरुष! मैं नहीं जानती थी, कि तुम मेरे साथ ऐसा विश्वास घात करोगे मुझको तुम सदा झूंठी सान्त्वना दे देकर आप इस प्रकार गुलछर्रे चड़ाते हो। हमें पति भक्ति का पाठ पढ़ाते हो और आप पर नारियों के साथ सहवास का आनन्द उड़ाते हो। हमारी आयु तुम्हारे इन्तज़ार की घड़ियाँ गिनते गिनते गुजर जाती हैं और तुमको उसकी ज़रा भी परवाह नहीं। अच्छा लो, यह तुम्हारे कर्मों का पुरस्कार आ रहा है।

(सरला धनुष पर तीर चढ़ाती है)

अधम— यह क्या सरले?

सरला— मैं अपने सुख के रास्ते में रोड़ा अटकाने वालियों का अन्त किया चाहती हूँ।

अधम— ऐ! भोली भाली, परदे के अन्दर रहने वाली नारी क्या आप समझती हो कि इन नारियों का अन्त कर देने से आप को सुख की प्राप्ति हो जावेगी?

सरला— क्यों नहीं! जब बाँस ही न होगा तो बंसी कैसे बजेगी।

अधम— न जाने कितने बाँस और कितनी बंसियाँ छल ने अपनी क्रीड़ा के लिये जमा कर रक्खी हैं। तुम तो इतने ही से घबड़ा उठीं।

सरला— तो तुम ही बताओ कि इसका कोई उपाय भी है?

अधम— उपाय तो बहुत सुगम है यदि आप मानें।

सरला— न क्यों मानूंगी बोलो वह क्या बात है?

अधम— तुम बनो प्यारी मेरी प्रीतम तुम्हारा मैं बनूं।
तुम ही हो बस्ती मेरी ऊजड़ में फिर क्यों मैं बसूं॥

सरला— बलिहारी, ठहरिये ठहरिये (तलवार निकाल के)
यह ही है प्यारी तेरी, प्रीतम इसी के तुम बनो।
यह ही है बसती तेरी, ऊजड़ में न अब तुम बसो॥

(तलवार का वार करती है पर अधम वार बचा के भागता है पर तुरन्त सरला तीर मार के गिरा देती है। उधर अधम के चीखने की आवाज़ छल के कानों में पहुंचती है)

छल— यह किस के चीखने की आवाज़ हमारे कानों में आई। मानो किसी ने किसी पर प्राण घातक आक्रमण किया हो, अथवा कोई ठोकर खाकर गिरा हो, चल के देखना चाहिये।

(वे सब उस स्थान पर पहुंचकर क्या देखते हैं कि अधम की पीठ में तीर घुसा हुआ है और वह औंधे मुंह पड़ा कराह रहा है और सरला रणचंडी रूप धारण किये सम्मुख खड़ी है। छल सरला को देख कर घबड़ा जाता है। फिर भी साहस करके पूछता है)

छल— कहो प्यारी इस ने क्या अपराध किया जो इसे ऐसा कठोर दंड दिया?

सरला— चुप रहो, प्यारी कहने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं। प्यारी तुम्हारी वह हैं जिनके साथ रंगरेलियाँ करते हो, जिनको अपना समझते हो, जिनके हाव भाव पर न्यौछावर होते हो! पर पाप सदा नहीं छिपता और जब उघड़ता है तो दंड भी अवश्य मिलता है इस लिये सब दंड भोगने को तैयार हो जाओ।

हे भगवान् यदि मैं मन, कर्म, वचन से सच्ची हूँ और मैं ने कभी स्वप्न में भी पर पुरुष की इच्छा न की हो तो मेरे शाप से इन पांचों नीच प्राणियों का नीचे का धड़ पत्थर का हो जाय।

[तत्काल ही पाँचों का नीचे का धड़ पत्थर का हो जाता है थोड़ी देर बाद जब क्रोध का वेग कुछ शान्त होता है। वह अपने पति को अर्ध पाषाण रूप में देख कर व्याकुल हो जाती है]

सरला— आह! यह मैंने क्या किया। क्रोध में कुछ भी भले बुरे का ज्ञान न रहा। मैं पतिव्रता कैसी? जिसने अपने हाथों अपने पति को कष्ट पहुंचाया। अब यह जीवन किसी काम का नहीं। इससे तो यही अच्छा है कि गंगा में चल कर डूब मरूँ।

[यह कह कर गंगा की ओर चल देती है। गंगा पर पहुंच कर थोड़ी देर भगवान् का ध्यान करती है - फिर गंगा में कूद जाती है।]

ड्राप सीन

(अंक दूसरा दृश्य पहला)

[दम की स्त्री सुबुद्धि का देवी के मन्दिर में पूजा करने आना, मार्ग में काम का साधू के वेष में सुबुद्धि के समीप आना]

❀ गाना ❀

काम— कोई ऐसा दाता नहीं मिला जो आशा पूरी कर देता।
मैं विषम ज्वाल में जलता हूँ कोई औषधि मेरी कर देता॥
दिन तीन भटकते बीत गये इस नगरी के बीच मुझे।
कोई ऐसा वैद्य न मुझे मिला 'हरो' रोग को मेरे हरलेता॥
है कोई दाता का सखा जो मेरी लगी को बुझाये।

सुबुद्धि— राम राम ! ऐसा अनर्थ कि एक भिक्षुक तीन दिन से नगर का चक्कर काट रहा है और कोई भी उसके दुःख दर्द का पूछने वाला नहीं। क्या परमार्थी लोग संसार से उठ ही गये ? कहिये महाराज क्या आज्ञा है ? दासी सेवा के लिये तैयार है।

काम— धन्य प्रभो ! आज एक दाता ने मुँह तो खोला। पर यह मेरा मनोरथ पूरा कर सकेंगी, इस की मुझे शङ्का है। जब बड़े बड़ों ने बात तक न पूछी तो इनसे भी क्या होना है।

सुबुद्धि— आप शौक़ से अपना मनोरथ कहिये मैं अवश्य उसे पूरा करूँगी।

खाने को यदि इच्छा होगी भरपेट भोजन करवाऊँगी।
द्रव्यकी यदि इच्छा होगी सो भी तुमको दिलवाऊँगी॥

सन्तों की सेवा से अपना मैं हरगिज़ जी न छिपाऊँगी।
तन मन धन अपना देकर के मैं अपना फ़र्ज़ निभाऊँगी॥

काम— सोच लो, पीछे पछताना न पड़े पश्चात्ताप की भिक्षा लेना पाप है, इस लिये सोचो और फिर सोचो।

सुबुद्धि— सोच लिया।

काम— समझ के जवाब दो?

सुबुद्धि— समझ लिया।

काम— मुझे अङ्ग सङ्ग की भिक्षा का दान दीजिये। और मेरा मनोरथ शीघ्रता से पूरा कीजिये।

सुबुद्धि— ऐं! यह मैं क्या देख रही हूँ? क्या सुन रही हूँ? साधू के वेश में एक कामी कुत्ता! तुम कौन हो?

काम— तुम्हारे रूप सुधा का भिखारी।

सुबुद्धि— मेरे पीछे पीछे चले आओ। देवी की पूजा करने के पश्चात् मैं तुम्हारा मनोरथ पूरा करूँगी।

काम— मैं आपका बड़ा कृतज्ञ होऊँगा।

[सुबुद्धि का देवी के मन्दिर की ओर प्रस्थान करना। सुबुद्धि का देवी के मन्दिर में घुस जाना। काम का बाहर दरवाज़े पर बैठा रहना।]

अज्ञान— भाई काम! तुम तो अच्छी साइत के घर से निकले जान पड़ते हो, कि बात की बात में त्रिवाचा भराली। विचारी थी भोली भाली जो आन की आन में तुमने जाल में फंसाली।

काम— हमारे नजदीक यह न कोई बड़ी बात है।
फंसाना औरतों का कोई बातों में घात है॥

अज्ञान— अब मैं क्या करूँ ?

काम— मैं इस से निबट लूँगा तुम छल और मोहिनी की मदद को जाओ · देखो तो उन्हों ने क्या किया है ?

अज्ञान— जो आज्ञा महाराज की। (जाता है)
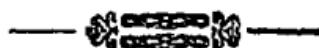
(दूसरा दृश्य)

[दोपहरी का समय है दम गंगा जी की महिमा गा रहे हैं। कांधे पर जल का घड़ा धरा है, वे गंगा से लौटना चाहते हैं]

❀ गाना ❀

दम— जै गंगे, श्री गंगे गंगे, जै गङ्गे श्री गङ्गे॥
स्नान किये से मल बह जाता,
मन के निर्मल बाहर आता.
होत 'हरो' सब चंगे॥ जै गङ्गे॥

[सहसा किसी के गंगा में कूदने की आवाज़ उसके कानों में पड़ती है। पलट कर देखते हैं तो स्त्री के केश पानी के ऊपर उतराते दिखाई पड़ते हैं। तुरन्तु घड़ा रखकर उसकी रक्षा को दौड़ते हैं , कुछ केश हाथ में आजाते हैं। केशों की सहायता से दम उसमूर्छित स्त्री को बाहर निकाल लाते हैं। फिर तरह तरह की युक्तियों द्वारा उसे चैतन्य करते हैं]

सरला— आपने मुझे जल से निकाल कर कोई उपकार नहीं किया।

दम— ऐसा भाग्य मेरा कहाँ जो मैं किसी का उपकार कर सकूँ। पर, ऐसा कौन सा सङ्कट आप पर पड़ा जो आपने इस तरह प्राण देने की ठान ठानी। अच्छा यदि आप में मेरे साथ चलने की शक्ति है तो मेरे साथ मेरे आश्रम तक चली चलो।

सरला— हाँ, शक्ति तो मुझ में है। पर आप मुझे यहीं छोड़ दीजिये. मुझ जैसी पापात्मा के जाने से आपका आश्रम भी अपवित्र हो जायेगा।

दम— क्या आप अपने पापों को अपने हृदय से स्वीकार करती हैं ?

सरला— हाँ, वास्तव में मैं बहुत पापिन हूँ।

दम— नहीं, अब तुम पापिन नहीं हो।

सरला— सो कैसे भगवन् ?

दम— मनुष्य तभी तक पापी है, जब तक वह अपने अपराधों को स्वीकार नहीं करता। जब वह अपने अपराधों का पश्चात्ताप करने लग जाता है। तभी से उसका उद्धार होना प्रारम्भ हो जाता है।

सरला— क्या आपकी दृष्टि में मेरा उद्धार हो सकता है ?

दम— निःसन्देह ! अब तुम मेरे साथ चली आओ पहले मैं तुम से तुम्हारी कथा सुन लूँ फिर उपाय बता दूँगा।

[दम सरला को साथ लेकर आश्रम को जाते हैं और उसे बैठने की आज्ञा देकर आप भी बैठ जाते हैं]

दम— तुम कौन हो और तुम्हारा क्या नाम है ?

सरला— श्री महाराज मैं महाराज छल की स्त्री सरला हूँ।

दम— तुम्हारे प्राण खोने का हेतु क्या है ?

सरला— मैंने अपने पति को चार कुलटा नारियों के साथ दुराचार में प्रवृत्त देखा। क्रोध के वशीभूत होकर उन पाँचों का शाप द्वारा नीचे का अर्धाङ्ग पाषाण कर दिया। जब क्रोध का वेग कुछ शान्त हुआ, तो अपने किये पर मैं पछताने लगी। इसी कालिमा को धोने के लिये मैं गङ्गा में कूदी थी। पर आपने मेरी कालिमा न छूटने दी।

दम— हाँ, वास्तव में बड़ी हानि हुई सरले ! जिस पति की सेवा के प्रताप से तुमने मनुष्य को शिला कर देने की शक्ति प्राप्त की थी उसी पति देव की तुमने ऐसी कुगति की। अच्छा नहीं किया।

सरला— यथार्थ है भगवन् ?

दम— मैं जानता हूँ कि वह दुराचारी है। पर वह तुम्हारा तो भगवान् ही है।

सरला— हाँ नाथ ! वे ही मेरे एक मात्र आराध्य देव हैं।

दम— सब कोई कर्म करने में स्वतन्त्र हैं पर फल भोगने में परतन्त्र हैं। तुम्हारे पति का काम के वशीभूत होने के कारण अर्धाङ्ग पाषण हुआ और तुमने क्रोध के वशीभूत होकर अपने सारे जन्म की कमाई क्षणमात्र में गंवाई।

सरला— न जाने उस दम मेरी मति पर क्या पत्थर पड़ गये जो ज़रा भी भला बुरा न सूझा।

दम— सरला ! तू निरी सरला ही है। देख यह, काम, क्रोध

दोनों के दोनों महा बलिष्ठ शत्रु हैं । हर दम घात लगाये ताका करते हैं। जरा भी असावधान पाया कि इन्होंने घर दबाया। इनके चंगुल में फंसकर कोई विरला ही निकल पाता है।

सरला— इसका कोई उपाय भी है।

दम— प्रायश्चित्त किये से यह पाप अब भी नष्ट हो सकता है।

सरला— कहिये कहिये वह प्रायश्चित्त क्या है ?

दम— तुम्हारा पति अब खा पी नहीं सकता। कारण कि जो रास्ते मल मूत्र त्यागने के थे सो तो पाषाण हो गये। और जब तक मल मूत्र का त्यागन न हो तब तक भूख प्यास का काम क्या ? इस समय उनको घोर कष्ट हो रहा है। इस लिये जाकर धूप तथा शीत से उनकी रक्षा करो। भगवान् से प्रार्थना करो. वही डूबती नैया का एक मात्र खिवैया है।

सरला— बहुत अच्छा ! अब मैं उन्हीं की सेवा में जाती हूँ।

दम— हाँ जाओ और भली प्रकार कर्तव्य का पालन करो। इसी से तुम्हारा और उनका कल्याण होगा।

सरला— क्या मेरे परिश्रम से वे भी चंगे हो जावेंगे।

दम— हाँ स्त्री पुरुष की अर्धाङ्गिनी है इस लिये तुम्हारे सुकर्मो का आधा फल उन्हें भी मिल जावेगा।

सरला— यह तन मन जो कुछ है अपना,
न्यौछावर है उन चरनों पर।
पत पति के हाथ है नाथ सदा,
मस्तक धर दूँगी चरनों पर ॥

[सरला दमके पद कमलकी धूरि माथे चढ़ाके आज्ञा कीजिये]

दम— जाओ और मेरे इन वचनों का ध्यान सदा रखना।

❀ गाना ❀

पत्नी तो वह ही जो पति को तावेदार रे ।। टेक ।।
दुःख पड़े जो पत्नी पति का तजत नहीं सत्कार।
वोही कष्ट मिटे हैं पति का करके सद् व्यौहार रे ।।
बनी बनी के सब कोई साथी बिगड़ी की एक नार।
जे नारी जा धर्महिं चीनहिं सेई पतिव्रता नार रे ।।
कुपति हो यदि पती तुम्हारा दे तुम को फटकार।
शरण छाँड़ कहिं अन्त न जाना मानो कहा हमार रे ।।
सेवा धर्म गहो जा सरले तज के सकल विकार।
यह बेड़ा 'हरी' पार लगावें समदर्शी त्रिपुरार रे ।।

❀ गाना ❀

सरला— जाती हूँ पति सेवा मे मैं मेरे तारन हार हाँ आँ आँ ।।
पति भक्ती का व्रत्त साध मैं हुई जइयों बलिहा अ अ र।
दोष, रोष सब ही सहलूँगी हैं ता वे भरता अ अ र ।।
आप सिखावन सिरपे धरियों जा मैं सरला ना अ अ र।
'हरी' प्रताप पार जात सब पामर नीच गँवा अ अ र ।।

(तीसरा दृश्य)

(स्थान मदन वाटिका)
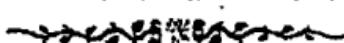
[एक ओर अधम की पीठ में तीर घुसा हुआ है। वह दर्द से छटपटा रहा है। दूसरी ओर छल मोहिनी की सखियों के सहित अर्ध पाषाण रूप में घोर यातनायें भोग रहे हैं]

अधम— कोई सज्जन हो तो मेरी पीठ से तीर निकाल लो, मुझे बड़ा कष्ट हो रहा है। क्या कोई भी मेरी बात को सुनने वाला पृथ्वी पर नहीं है ? आह ! आह !

छल— तुम्हारी बात के सुनने वाले तो यहाँ कई मौजूद हैं पर हम में से तीर निकालने की सामर्थ्य किसी में भी नहीं।

अधम— क्या महाराज छल मुझ से बातें कर रहे हैं ?

छल— हाँ, भाई ! मैं ही तुम से बोल रहा हूँ।

अधम— क्या आपको मेरे ऊपर तनिक भी दया नहीं आती ?

छल— दया तो आती है पर दया कर नहीं सकते।

अधम— इस हेतु से, कि मैं आपका अपराधी हूँ।

छल— इस हेतु से नहीं। किन्तु हम पाँचों अर्ध पाषाण रूप में हैं कहीं भी चल फिर नहीं सकते। स्वयम् भी अपनी रक्षा आप करने में जब हम असमर्थ हैं तो तुम्हारी रक्षा कैसे करें ?

अधम— आपको अर्ध पाषाण रूप में किस ने कर दिया ?

छल— एक ही अत्याचारी के अत्याचारों से हम सब पीड़ित हो रहे हैं।

अधम— यानी सरला के।

छल— हाँ यह सब उसी पापिन ने तो किया है।

अधम— उसे पापिन न कहो, इन सब अनर्थों की जड़ वह नहीं मैं पापी हूँ। वह तो प्रथम श्रेणी की पतिव्रता है।

छल— इन सब अनर्थों की जड़ वह नहीं तुम हो, वह पतिव्रता है। यह क्या रहस्य है ? कुछ समझ में नहीं आता।

अधम— दर्द से प्राण छटपटा रहे हैं, और प्यास से गला सूख

जाता है। बोलने में कड़ी पीड़ा हो रही है। पर मरने से पहले अपना दोष प्रकट करूँगा।

छल— हाँ, हाँ सब सच्चा हाल कह डालो।

अधम— बोलने की शक्ति नहीं पर साहस बटोर कर बोलता हूँ- आपकी स्त्री सरला पर मेरी बहुत दिनों से कुदृष्टि थी उनके मन को आप से हटा के अपनी ओर आकर्षित करने के लिये मैं ही उसे अपने साथ यहाँ तक लाया वह तुम्हें देखते ही आग बबूला हो गई। उसे समझाया फिर प्रेम भिक्षा माँगी तो उसने तीर मार के जो गति की सो आप देख रहे हो।

छल— तो यों कहो कि सारी करामात आप ही की है।

अधम— हाँ यह सब दोष मेरा ही है।

छल— वह न जाने अब कहाँ होगी ?

चपला— उनका अब क्या ठिकाना ? न जानें किधर चली गईं ?

चम्पा— यदि होतीं तो क्षमा याचना करते।

कामिनी—प्रार्थना में बड़ी शक्ति है। इससे पत्थर भी मोम हो जाता है।

छल— अब उद्धार कठिन है। जो शरीर अब तक क्रीड़ा केन्द्र था, अब पीड़ा केन्द्र हो रहा है। हाय यह दुःख मुझसे कैसे उठाये जायेंगे सरला! तू तो मुझे कभी दुखी देखती थी, तो व्याकुल हो जाती थी अब तुझ में कठोरता कहाँ से आ गई।

चम्पा— यदि तुम्हें दण्ड ही देना था तो सारा शरीर पत्थर कर देती तो अच्छा होता। अब इस विपत्ति से हमें कौन छुड़ायेग ?

चपला— वहिन न जाने यह प्राण कहाँ अटक रहे हैं ?

कामिनि—हाय ! मेरे तन में घोर पीड़ा हो रही है। कोई मेरे रक्त को सोखे लेता है।

भामिनी—हाय ! कोई भी हम दुखियों की टेर का सुनने वाला नहीं, क्या दया को भी हम पर दया नहीं आती ?

[दया देवी का प्रवेश]

दया— दया का काम तो सदा दया ही करना है। पर शाप पीड़ित मनुष्य के निकट दया पहुँचने में असमर्थ है।

छल— जब तुम ही माता ऐसा कहती हो, तब तो हमें बिल्कुल ही निराश हो जाना पड़ेगा।

दया— एक उपाय है, उद्योग करती हूँ । यदि मुझे सफलता मिली तो उद्धार होना सम्भव है।

छल— कृपया ! यह भी कहिये वह कौन सा उपाय है ?

दया— मैं तुम्हारी स्त्री के हृदय में, दया का संचार करूँगी, इससे प्रेरित हो के यदि वह यहाँ आई तो जान लेना कि तुम्हारा उद्धार होगा अन्यथा नहीं।

छल— आपका बड़ा उपकार होगा।

[दया का अन्तर्धान हो जाना]

[अज्ञान और मोहिनी आते हैं]

अज्ञान— (दूर ही से) ओहो ! आप लोग यहाँ मौजें मार रहे हैं।

छल—हमारी रक्षा करो।

अज्ञान— अरे भाई किस अवस्था में हो ?

छल— भयानक यातनाएं भोग रहे हैं।

अज्ञान— कैसी यातनाएँ खैर तो है ?

छल— (पैरों की तरफ इशारा करके) लो देखो।

अज्ञान— यह क्या ! यह तो मांस नहीं पत्थर है। यह दशा कैसे हुई ?

छल— मेरी स्त्री ने मुझे शाप देकर यह गति की है।

मोहिनी—क्या मेरी सखियों की भी यही हालत है ?

छल— हाँ।

मोहिनी— (अपनी सखियों से) सखियों-यह मैं क्या देख रही हूँ।

कामिनी—एक सरल-चित्ता स्त्री का चमत्कार और दुश्चरित्रता का पुरस्कार आपके नेत्रों के सन्मुख है।

❀ सब का गाना ❀

न जानें कब तक पड़ेगी सहनी, विपत है सिर पर हमारे भारी।
तड़प रही हैं बचालो कोई, विपत है सिर पर हमारे भारी॥
समझ के सुख था क़दम बढ़ाया पर हाथ कुछ भी न अपने आया।
दुखों का बादल आ सिर पे छाया, विपत हैं सिर पर हमारे भारी॥
कुकर्मी कुछ दिनही सुक्ख पाता, सुकर्मी कुछ दिन है दुख उठाता।
अनन्त सुख है सुकर्मी पाता, विपत हैं सिर पे हमारे भारी॥
अब कौन है जो हमें छुड़ाये, सुकर्म पथ पर हमें लगाये।
'हरी', तुम्हारी शरण में आये विपत है सिर पर हमारे भारी॥

अधम— कोई मेरी भी सुन लो मैं मरा जाता हूँ।

अज्ञान— यह आवाज़ किस की है ?

छल— अधम राय की।

अज्ञान— इन्हें क्या हुआ ?

छल— वह भी मेरी स्त्री का निशाना बना कराह रहा है।

अज्ञान— तुम्हारी स्त्री क्या पूरी यमदूतिनी है ?

मोहिनी— खैर हो गई, जो हम तुम उसके सामने नहीं पड़े। नहीं तो यही दुर्गति अपनी भी होती।

छल—इसमें क्या सन्देह है ?

[सरला दूर से गाती हुई चली आ रही है]

❀ गाना ❀

सरला— पड़ी नैया भँवर में आय, स्वामी पार लगा॥ टेक

करें काम क्रोध बरजोरी, मैं अबला मति की भोरी,

तोही से लागी डोरी, नैया पार लगा। पड़ी

अज्ञान— यह किस के गाने की आवाज कान में आ रही है ?

छल— स्वर तो परचित सा है। हो न हो मेरी स्त्री सरला ही इधर आ रही है।

मोहिनी— क्या कहा सरला ?

छल— हां देखा वही आ रही है।

मोहिनी—(अज्ञान से) भागो यदि कुशल चाहते हो।

छल— डरो नहीं अब वह शाप न देगी।

मोहिनी— मैं उसके आगे नहीं टिक सकती, वह देखते ही भस्म कर देगी।

[अज्ञान व मोहिनी दोनों भाग जाते हैं]

[गाने की आवाज़ पास आती जाती है]

❀ गाना ❀

सरला— पड़ी नैया भँवर में आय, स्वामी पर लगा॥

करें काम क्रोध बरजोरी, मैं अबला मति की भोरी,

तोही से लगी डोरी, नैया पार लगा॥ पड़ी०

मेरे सिर पै सङ्कट भारी, तुम दीनन के हितकारी,...
कर जोड़े 'हरी' गँवारी, नैया पार लगा॥ पड़ो०

छल-- कौन ! सरला ।

सरला— हां नाथ ।

छल— सन्मुख क्यों नहीं आती ?

सरला— कौन सा मुँह लेकर सामने आऊँ ? कौन मुँह लेकर क्षमा याचना करूँ ? मुझ सी कुलटा संसार में कौन होगी अपने पूज्य पति ही को शाप दे बैठी, हे जिह्वा ! उस समय तू ही क्यों न गिर गई। न तू होती न मुख से दुर्वचन निकलता । अरी पृथ्वी ! शाप देने से पहिले तूही क्यों न फट गई जिसमें मैं समा जाती । हे देव तुमने मुझसे यह क्या कराया। ऐसा मैंने कौनसा अनर्थ किया था जो मुझे यह दिन देखना नसीब हुआ ? हे भगवन्! तेरी लीला अपार है ।

[दया देवी का प्रवेश]

दया— हे पुत्री ! भगवान् को मिथ्या दोष न दे । वह सदा ही निर्दोष हैं।

सरला-- (हाथ जोड़ के) तब क्या यह दोष मेरा है ?

दया— दोष तेरा और तेरे पति का समान है।

सरला-- हे माता ! मुझे मेरा दोष बता दीजिये जिस से मैं आगे को सावधान हो जाऊँ।

दया— तुझको पतिभक्ति का अभिमान् था और भगवान् कभी किसी का गर्व देख नहीं सकते । तेरे पति में तो अनेकों दोष थे भगवान् को उसके कुकर्मों का उसे दंड देना था,

और तुझे तेरे अभिमान का।

सरला— इस दंड से मुक्ति कैसे होगी।

दया— तू सात दिन निराहार रहकर शाप पीड़ित प्राणियों की रक्षा कर, दुखियों की सेवा से भगवान् प्रसन्न होते हैं।

[इतना कहकर दया अन्तर्धान हो गई]

(चौथा दृश्य)

[स्थान जंगल अज्ञान व मोहिनी की भेंट]

अज्ञान— कहो मोहिनी ! क्या हाल है ?

मोहिनी— क्या पूँछते हो हाल वह तो बेहाल है।
फंस जाय जिसमें वह न कोई ऐसी चाल है ॥

हर तरह प्रीति दिखाई, समझाया, मनाया मगर वह किसी तरह भी क़ाबू में न आया।

अज्ञान— चलो एक बार फिर दम के पास चला जावे।

मोहिनी—मुझे तो निराशा ही झलकती है।

अज्ञान— यह तुम्हारा मिथ्या विचार है, जबतक श्वासा तब तक आशा।

मोहिनी—जब आपकी ऐसी इच्छा है तो चलिये।

[दोनों का आश्रम की ओर जाना, दम का गाते नज़र आना]

❀ गाना ❀

दुनिया की चाल दुरंगी है दिल इस से दूर हटा बाबा।
चाहे घर में रहो या बन में रहो 'हरि' पद से प्रीत लगा बाबा ॥

दुनियां में बुराई से बचना, दुष्टों से प्रीत न कम करना।
बीमारी की औषधि करना, बीमार से मत घबड़ा बावा॥
न साथ में यहां कुछ लाये थे, न साथ में कुछ ले जाना है।
जीते जी के सारे धन्धे, मत रक्खो खुशी का मना बावा॥
जो पैदा है नापैद है वह, क्या इस पर मान करे है तू।
कान्ता कञ्चन के फेर में फँस मत वृथा जन्म गंवा बावा॥
जो इन से फेरे फिरते हैं, 'हरि' सदा फेर में रहते हैं।
इस एरा फेरी के चक्कर से, तूं मुझको जल्द छुड़ा बावा॥

मोहिनी—(अज्ञान से) कुछ सुना ! कहो कैसा विचार है ?

अज्ञान—रोग तो भयंकर ही जान पड़ता है। खैर देखा जायेगा।

[दम के चरणों में दोनों का गिरना]

दम— ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे (मोहिनी से) यह मनुष्य कौन है ?

मोहिनी—यह मेरा सहोदर भ्राता है। आज मुझे ढूँढ़ते २ इधर आ निकला है।

दम— चलो अच्छा हुआ जो तुमको तुम्हारा भ्राता मिल गया अब तुम इनके साथ अपने आश्रम को लौट जाओ।

मोहिनी—घर दर अपना जो था सो सब कुछ नाथ विसारा है।
मैं चरणों पर बलिहारी हूं नहिं तुम बिन नाथ गुजारा है॥

दम—जो कुछ तू चाहे है भामिन वह मुझको नहीं गवारा है।
तुम अपनी बहिनको समझालो इसका यहां नहीं गुजारा है।
मुझसे वैरागी पुरुषों से नहीं काम सरे यह तुम्हारा है॥

अज्ञान— चाह है जिसको जिसे वह उसे मिल जाते हैं।
कैसी अनरीत है जो आप न अपनाते हैं॥
घर पै आये का कोई करता तिरस्कार नहीं।
आपको चाहिये करना कभी इन्कार नहीं॥

दम— झूठी बातों से कोई मुझको सरोकार नहीं।
शान्ति जिसका है मिली कुछ उसे दरकार नहीं॥
स्वार्थ की गन्ध मुझे आती है इसके मुँ से।
तुम ही बताओ इसे चाहूं तो चाहूं कैसे॥

अज्ञान— शोक! कि हमारे बचनों का आप पर कोई भी असर नहीं होता।

यदि यह पत्थरपर बीज मोह का जाकर अपना कहीं यह बोती।
तो था यह निश्चय कि उसकी शीतल छाया में जाकर कभी तो सोती॥
उसांमे उलटी कभी है भरती दहाड़ें मारे फिरे है रोती।
बिलखती फिरती इधर उधर जो न तुमसे मिलती न ऐसी होती॥

दम— अरे मूर्ख! तू क्यों मुझे पट्टी पढ़ाता है?
सम्भव नहीं जो रूप हम निस्सार को चाहें॥
पर नारि गले बीच नहीं डालते बाहें।
चलते न बुद्धिवान जो हैं कांटों की राहें॥
हर रूप सुघड़ देख कर भरते नहीं आहें।
क़ाबू में यह मन रखते हैं क़ाबू में निगाहें॥

अज्ञान— क्या आप किसी प्रकार भी इसे स्वीकार न करेंगे।

दम— कदापि नहीं।

अज्ञान—इस से इतनी नफ़रत क्यूँ?

दम— मैं किसी से नफ़रत नहीं करता मुझे तो उन कामों से नफ़रत है, जिन में मुझे मोहिनी प्रवृत्त करने के लिये अग्रसर हो रही है। मुझ सा मूर्ख और कौन होगा जो निवृत्त को छोड़ कर प्रवृत्त मार्ग का अवलम्बन करे।

हृदय अन्दर सोच समझ, यह रङ्ग नज़र जो आते हैं।
विश्व मार्ग के कंटक हैं, सब दुःख दाई कहलाते हैं॥
जो कोई इनको अपनाकर, इनपर बलि बलि जाते हैं।
विषय सिन्धु में डूब डूबकर, नित प्रति गोते खाते हैं॥
इस लिये मेरा इनको दूर ही से नमस्कार है॥

❀ गाना ❀

मोहिनी—मैं वारी! साजन इधर तो आओ।
मैं हूँ दुखारी प्रेम की मारी प्रेम की ज्योति जगाओ॥
तुम ही आशा, तुम ही श्वांसा, तुम ही धीर धराओ।
प्रेम के रङ्ग में रङ्गी तुम्हारे, छाँड़े कहाँ को जाओ॥

दम— न तुम हो मेरी न मैं तुम्हारा, मत मुझको उरझाओ।
उरझो जाके आज 'हरि' संग या अपने घर जाओ॥

[दम का जाना मोहिनी का रास्ता रोकने पर दम का बचकर निकल जाना]

मोहिनी— हाय निर्दयी चला गया!

अज्ञान— यहाँ तो पासा उलटा ही पड़ा।

(पाँचवाँ दृश्य)

(स्थान मदन वाटिका)

[कुल मोहिनी की सखियां, अधम व सरला का दिखाई पड़ना]

अधम— कोई मेरी रक्षा करो मैं मरा जाता हूँ।

[सरला अधम के पास जाती है]

सरला— कहो जी अधमराय मिजाज तो अच्छा है ?

अधम— कौन ! सरले।

सरला— कहो क्या कहते हो ?

अधम— मुझे बड़ा कष्ट हो रहा है।

सरला— मुसीबत कौन झेलेगा मजा तुमने उड़ाया है।

अधम— अब तो दया करो करनी का फल पा चुका।

सरला— प्रतिज्ञा करो, कि कभी किसी सतवन्ती नारी को छलने की चेष्टा न करोगे।

अधम— मैं प्रतिज्ञा करता हूं। और सदा अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहूंगा।

[सरला का पीठ से तीर निकाल कर औषधि लगाना]

[अधम धीरे २ उठ कर सीधा हो जाता है]

अधम— (हाथ जोड़ के) बहिन सरले मुझे क्षमा करो। मैंने तुम्हें नहीं पहिचाना। तुम जैसी सती नारियों ही से सृष्टि की शोभा है। कहो अब क्या आज्ञा है।

सरला— जाओ विश्राम करो।

अधम— विश्राम तुम्हारे चरणों में अब अन्त कहीं नहीं जाऊँगा।
तब कुटिल दृष्टि से हेरे था अब बहिन मैं तुझे बनाऊगा ॥
जीवन जो दान किया तैने सो तेरे अर्पण है भैना।
तू जिस विधि राखेगी मुझको मैं उसही में सुख मानूंगा ॥

[सरला फिर पति के निकट जाती है]

सरला— (पति के हाथ जोड़ के) कहिये क्या आज्ञा है ?

छल— धूप से तबियत व्याकुल हो रही है, गला सूखा जाता है। [सरला कुछ जल 'छल' के मुँह में डालती है जिस से उसे कुछ शान्ति होती है फिर थोड़ा २ जल सबों के मुह में डालती है और उद्यान की ओर से बहुत सी घास फूंस बटोर कर एक छोटी कुटी तैयार करती है]।

छल— [सरला से] आज तुम्हें बहुत कष्ट हुआ होगा।

सरला— पति सेवा में कष्ट होता है यह मैंने आज ही सुना है। जो नारी पति सेवा में कष्ट का अनुभव करती है वह नारी नहीं कुलटा है।

चपला— धन्य हो सरले धन्य हो।

कामिनी— तुम आदर्श महिला हो।

भामिनी—आज से हम प्रतिज्ञा करती हैं कि आपकी आज्ञा में रहेंगी।

चम्पा— बहिन सरला आपने ३ दिन से कुछ नहीं खाया पिया जिस पर इतना परिश्रम करती हो। कैसे उठा, बैठा चला फिरा जायगा।

सरला— पतिव्रता को पति के पहिले खाने पीने का अधिकार नहीं। जब पति ही मुँह बन्द किये हुये हैं, तो नारी कैसे खा पी सकती है ?

कामिनी—यदि खा पी कर शरीर की रक्षा न करोगी तो पति की रक्षा करने में भी असमर्थ हो जाओगी।

सरला—धर्म के बल से पतिव्रता सब कुछ सह सकती है और कर सकती है।

❀ गाना ❀

सरला— मग्न रहो नारी पति सेवा में ॥

नारी जन्म सुकृत है तब ही, रहे मतवारी पति सेवा में ॥
थीं सीता सतवन्ती नारी, बनो बनचारी पति सेवा में।
हरिश्चन्द्र तिय काशी बिकी थीं, तजी सरदारी पति सेवा में ॥
दमयन्ती कुन्ती व सावित्री ने, सहे दुख भारी पति सेवा में।
जो बहिनों तुम 'हरी' सिख मानो, बनो पियाप्यारी पतिसेवा में॥

चपला— धन्य हो बहिन सरला, तुमने वह पाठ पढ़ाया जो कभी न पढ़ा।

चम्पा— जो आदर्श तुमने दिखाया सो कहीं न देखा।

[सरला दिन प्रति दिन क्षीण होती जा रही है उठने बैठने की शक्ति भी जाती रही]

छल— मुझे गर्मी सता रही है सरला !

सरला— आती हूं प्राणनाथ [उठने की चेष्टा करती है, उठती है पर गिर पड़ती है।]

छल— क्या अब न आओगी सरला ?

सरला— आया तो चाहती हूं पर आया नहीं जाता ॥

कामिनी—क्या पतिव्रता का साहस व शक्ति भी क्षीण हो जाती है बहिन !

भामिनी—इसी लिये हम कहती थीं कि निराहार न रहो।

सरला— अभी तुमने पेट पालना ही सीखा है अब धर्म पालना सीखो।

चपला— इसका क्या मतलब ?

सरला— इसका मतलब यह कि संसार में जितने जीव धारी हैं, पेट सब ही पालते हैं। पर मनुष्य शरीर वह शरीर है, जो धर्म की बलिवेदी पर तन, मन, धन, जन सब का बलिदान करने को तय्यार रहता है।

❀ गाना ❀

गहन है धर्म की डागरिया ॥ टेक ॥
पाइन गढ़ गढ़ जाँय, नुकीली पैनी काँकरिया ॥
धर्म कमाई काजै आयो, तज प्रभु की नागरिया।
क्यों सोया मद लोभ मोह की, ओढ़ के चादरिया ॥
सारी कमाई कूकर खाई, संग न जैहै एक हू पाई।
जइयो हाथ पसारे, सीस पै रीती गागरिया ॥
पुण्य प्रताप नर देही पाई झूठे सुख में ताहि गँवाई।
'हरि, सनमुख क्या लेखा देगा, बता तो पामरिया ॥

चम्पा— इससे ज्ञात हुआ कि संसार में क्या धर्मात्मा, क्या पापात्मा सब ही कष्ट भोगते हैं।

सरला— पर दोनों के कष्टों में आकाश और पाताल का अंतर है।

कामिनी—अन्तर कैसा बहिन ?

सरला— धर्मात्मा कष्टों से प्रीति करता है और पापात्मा भयभीत होता है।

भामिनी—यह बात समझ में नहीं आई।

सरला— तुम अग्नि से भयभीत होती हो कि यदि कहीं छू जायगी तो जल जायेंगे, पर पतंग दीपक की ज्योति के साथ खेलता है और उसी में विश्राम पाता है। उसे तनिक भी कष्ट नहीं होता। पापात्मा कष्ट पड़ने पर हाय.२ चिल्लाते हैं, पर धर्मात्मा कष्ट पड़ने पर केवल भगवान् का स्मरण करते हैं।

भ्रम रूप है सुख की छाया, दुख ही है जग का जीवन।
आशा तृष्णा में फँस कर क्यों सिर पर धारा है बन्धन॥
वे मुक्त जीव कहलाते हैं, जिन छू न गया अपना पन।
हँस हँस कर पीड़ा सहते हैं, तज देते जो चंचल मन॥

चपला— अब ! दुःखों का कब अन्त होगा ?

सरला— केवल भगवान् अनन्त हैं, बाकी सब चीजों का अन्त है। जब सुख न रहा तो दुख भी न रहेगा। उसकी महर की देर है।

भगवान् ! बहुत विलम्ब हो चुका, अपराधों को क्षमा करो।
तुम दीन दयालु कहाते हो, किस कारण करते हो देरी।
अकुलाय रहे व्याकुल प्राणी, न दयाकी अबतक दृष्टि करी॥

जल जाय जो खेती तापों से, फिर बरसे से क्या पायेंगे।
उजड़ी बसती बस जाने दो, हरि नाम के गुण सब गायेंगे॥

(आकाश वाणी)

विनती तेरी स्वीकार करो, हम अमृत जल बरसायेंगे।
बचना दुष्टों की संगति से, नहीं फेर बुरे दिन आयेंगे॥

[अमृत बूँदें आकाश से गिरती हैं और सब चंगे ही हो जाते हैं। सब गद् गद् कंठ से स्तुति गाते हैं]

❀ गाना ❀

आओ आओ प्रभु गुण गायेंगे हाँ।
उसकी लीला पे बलिबलि जायेंगे हाँ॥
उसकी लीला अगम्य अपार है,
जिस का पाता न कोई पार है।
उस से प्रेम का पंथ निभायेंगे हाँ॥
झूठे सुख को सदा ठुकरायेंगे,
'हरी' भक्ति में प्रीति बढ़ायेंगे।
मन चरण कमल में लगायेंगे हाँ॥

ड्राप सीन

(अंक तीसरा दृश्य पहला)

[देवी के मन्दिर में सुबुद्धि का प्रार्थना करना]

सुबुद्धि— जगदम्बे करहु सहाय हरहु दुख जगदम्बे।
पाप प्रवाह भयंकर उमड़ा, डूबन चाहत मंझधार॥
साधू वेश में छलिया है आया, दुआरे खड़ा तय्यार।
पापी पतित त्रिवाचा भराली, अंग संग मोसे चाहे॥
जो माई मैं वचन को पलटूं, साख हमारी जाय।
जो मैं अंग संग करूँ इससे पतिव्रत धर्म मोरा जाय॥
सांप छुँछूदर दशा हुइ अपनी, खाया न उगला जाय।
जब जब भीर पड़ी भक्तन पर, तूही तो भई है सहाय॥

[विनती करते २ माता जगदम्बा के ध्यान में लीन हो जाना उधर माता जी के सिंहासन का डोलना]

जगदम्बा-अरे यह क्या! मेरा सिंहासन क्यों डोल रहा है? सिंहासन का डोलना मेरे किसी भक्त पर आपत्ति आने की सूचना दे रहा है। चल कर उसको सहायता करनी चाहिये।

[जगदम्बा की मूर्ति में साक्षात् जगदम्बे का प्रकट होना]

बेटी सुबुद्धि इतनी क्यों व्याकुल हो रही है।
आंसू से किसलिए तू मुंह अपना धोरही है॥

सुबद्धि का माता जगदम्बा के चरणों में गिरना]

सुबद्धि— माता! माता! मुझे बचा।

जगदम्बा—किस से ?

सुबुद्धि—उस से जो मुझे भ्रष्ट करने पर तुला है।

जगदम्बा—वह कौन है ?

सुबुद्धि—एक कपट वेषधारी साधू

जगदम्बा—साधू और तुझे भ्रष्ट क ना चाहे।

सुबुद्धि— हाँ माता।

[जगदम्बा का ध्यान धर कर देखना]

जगदम्बा—बेटी तू ठीक कहती है वह कपटी साधू साक्षात काम ही है। जो तेरे पतिव्रत धर्म से तुझे गिराने आया है और तुझे अन्धकार के अँधेरे ग़ार में गिराने आया है।

सुबुद्धि—माता मेरी रक्षा करो।

जगदम्बा—ले यह ज्ञान की बूटी तुझे पिलाती हूं। यह ज्ञानकी बूटी हर समय तेरी रक्षा ही करेगी। इस दुष्ट पर विजय पाने में सहायक बनेगी और मैं तेरी सहायता अज्ञात रूप से किया करूंगी।

[माता जगदम्बा की अन्तर्धान हो जाना,
सुबुद्धि का मन्दिर के बाहर आना]

काम— ऐ सुन्दरी ! तेरी प्रतीक्षा करते २ मैं व्याकुल हो उठा। तेरा देरी से आना मेरे लिये कंटक के समान खटक रहा था।

सुबुद्धि—ऐ कपट वेष धारी साधू !

इस साधु भेष को किस लिये कलंकित करते हो।
दुराचारी हो सदाचार का क्यों स्वांग भरते हो॥
कहाँ यह योगियों का भेष, कहां पाप वासना का संचार,
यह कैसा अत्याचार।

काम— मैं तो योगी फ़कत तुम्हारा हर दम तेरा ध्यान धरूं ।
चाहूँ तुमको और तुम्हारे हृद् तंत्री का तार बनूं ॥
प्रिये तुम्हारे चन्द्र बदन को देख देख मैं जिया करूँ ।
चाहूँ तेरे अधर सुधा के रस को हरदम पिया करूँ ॥

सुबुद्धि— चाह तेरी को ज़रा भी मुझे है चाह नहीं ।
रूए स्याह कर न इस रूह को अब स्याह कहीं ॥
चाहने की चीज़ पर डाली न गई तुमसे निगाह ।
दूर हो यहाँ से नाबकार ओ बदकार कहीं ॥

* गाना जवाब सवाल में *

काम— मेरी चाह को तूने जाना न जानी ।
सुबुद्धि— करो प्रेम भगवान् से छोड़ो नादानी ॥
काम— मैं तुमको ही जपता हूँ अपने हृदय से ।
तू मुझसे ही करती सदा बद गुमानी ॥

सुबुद्धि— विषयों में आसक्त होकर ओ मूरख ।
तड़पता है मछली बिना जैसे पानी ॥
काम— दीन और दुनिया से मुझको न मतलब ।
क्यों बेकार छेड़ी है ऐसी कहानी ॥
सुबुद्धि— क्यों आँखों पर परदा तुम्हारी पड़ा है ।
विषय में जो फंस कर करो धर्म हानी ॥
काम— न बातें बना कर भुलावे में डालो ।
धर्म धारियों की क्या ये ही निशानी ॥
सुबुद्धि— धरम पर मैं अपने न आँच आने दूंगी ।

मिटा दूंगी सारी तेरी तंवरानी ॥

अच्छा पापी बोल तू क्या चाहता है ?

काम— कृपा कटाक्ष का मुझे प्रसाद दीजिये ।

व्याकुल हृदय को मेरे जरा तृप्त कीजिये ॥

सुबुद्धि— विषयों से तृप्ति कदापि न होगी ।

विषय वासना कोई साथी न होगी ॥

सती नारियाँ क्यों छलते हो छलियों ।

इस में भलाई तुम्हारी न होगी ॥

काम— यह युक्तियाँ, यह ज्ञान उपदेश लोगों को भुलावे में डाल ने को कुंजी है वरना इन थोथी बातों में धरा ही क्या है ? नारी पुरुष का जोड़ा तो विधाता ने स्वयं ही अपने हाथों बनाया है । तुम हो नारी और मैं हूँ पुरुष, जोड़ा तो बना बनाया है ।

सुबुद्धि— तुम्हरी नारी तुम्हारे घर होगी, मैं तो पराई नारीहूँ और पराई चीज का लेना पाप है ।

काम— तुम बुद्धिमती होते हुए भी निर्बुद्धियों की तरह बातें करती हो । अपना पराया तो अज्ञानियों के हृदय में होता है । तुमको ऐसी बातें शोभा नहीं देती । बहती धारा में जो चाहे हाथ धोले ।

सुबुद्धि— जहां धारा बहती हो वहाँ हाथ धो लेना ; यहाँ तो मरु भूमि है, जल का कहीं पता भी नहीं ।

काम— यदि ऐसा है तो मैं पाताल फाड़ कर गंगा बहाऊँगा ।

❀ गाना ❀

सुबुद्धि— एरे निपट निर्लज्ज तू किस धुन में अब लगा है ॥
सुख शान्ति ढूंढ़ता है नारी के रूप रंग में।
मूरत पै उनकी तू जो बलिहार हो रहा है ॥
है हाड़, माँस, विष्टा, मल, मूत्र की यह थैली।
ऊपर से रँग दिया है कपड़े से ढक दिया है।
इस में न सार कुछ भी परदा हटा के देखो।
किस झूँठे सुख के पीछे बरबाद हो रहा है ॥
अब भी सचेत होजा प्रभु प्रेम गीत गाजा।
जग में 'हरी' चरन बिन कोई नहीं सगा है ॥
देख तू अब भी अपनी हठ को छोड़ पाप वासना से मुँह का मोड़, मैं तुझे बार बार समझाती हूँ।

काम— तू ही अपने सत्वादीपने के स्वाँग का अन्त करदे और कहदे कि मैंने तुम्हें कोई वचन नहीं दिया था।

सुबुद्धि—यह नहीं हो सकता।

काम— तो मेरा भी इरादा टल नहीं सकता।

सुबुद्धि— फिर चलिये और अपना इरादा पूरा कीजिये।

काम— कहाँ ले चलोगी?

सुबुद्धि— जहाँ मेरी इच्छा होगी।

काम— चलिये।

[सुबुद्धि का माता जगदम्बा के मन्दिर में काम को साथमें लेकर जाना जहाँ अनेकों नर नारी साधु सन्त पुजारी बैठे देवी की पूजा कर रहे थे]

काम— यहां तुम मुझे किस हेतु से लाई हो ?

सुबुद्धि— तुम्हारी अभिलाषा पूर्ण करने के लिये।

काम— मेरी अभिलाषा यहाँ पूर्ण न होगी।

सुबुद्धि— क्यों ?

काम— क्यों कि मेरे मनोरथ सिद्धहोने का यह उपयुक्त स्थान नहीं।

सुबुद्धि— तब, तुम्हारे लिये कौन सा स्थान उपयुक्त होगा ?

काम— जहां सिवाय तुम्हारे और हमारे कोइ तीसरा न हो।

सुबुद्धि— ऐसा तो स्थान मेरी दृष्टि में कोई नहीं जहां परमात्मा मोजूद नहीं। जब उन्हीं का हमें भय नहीं, तो संसारी लोगों से क्या भय ? वह तो हमारे सम्पूर्ण कर्मों के हर काल, हर घड़ी, हर जगह साक्षी हैं, जब उनके देखते हम बुरे कर्मों से नहीं चूकते तो इस जन समूह की भी हमें लज्जा न करनी चाहिये। आईये और अपना मनोरथ पूरा कीजिये।

[यह बात सुबुद्धि ने कुछ ऐसे ज़ोर से कही कि उसकी आवाज़ प्रत्येक मनुष्य के कानों तक पहुंच गई]

कुछलोग-क्या मामला है माई ?

सुबुद्धि—यह महा पुरुष मुझ से अपनी अनुचित इच्छा पूरी करना चाहते हैं। वचनबद्ध होने के कारण इन की मांग को स्वीकार करती हूँ। यह अपनी इच्छा छिप कर पूरी करने के लिये मजबूर करते हैं और मैं छिप कर किसी काम का करना पाप समझती हूँ। कहिये आप लोगों की इस में क्या सम्मति है ?

कुछलोग—धिक्कार है पापी तुझ को जो ऐसी सती नारियों पर कुदृष्टि डालता है।

कुछलोग—ऐसे पापीका सिर धड़से अलग करने में कोई पाप नहीं।

कुछलोग—ऐसे ही चाँडाल साधू वेष को कलंकित किये हुये हैं इन दुष्टों का मुंह देखना भी पाप है।

कुछलोग—अरे यह धूर्तराज अब भी हमारे नेत्रों के सन्मुख खड़े दिखाई पड़ रहे है। मारो! मारो !! मारो !!! (सब लोगों का काम पर लाठी घूंसा, तमाचा आदि से प्रहार करना)।

[काम का आर्त्तनाद करना]

(अंक तीसरा दृश्य दूसरा)

[ज्ञान, दया, क्षमा आदि का दिखाई पड़ना]

दया— मुझे तो इस दुष्ट पर दया दिखाना सांप को दूध पिलाना है।

क्षमा— यह भारत भूमि दया प्रधान देश है यहां सांप जैसे घातक जीव को भी दूध ही पिलाया जाता है।

ज्ञान— यदि तुम्हारी यही इच्छा है तो चलो बचा दें।

(सब का प्रस्थान)

[पहले परदे का उघड़ना काम का पिटते हुऐ दिखाई देना]

दया— सावधान! सावधान!! कहीं अनर्थ न हो जाय।

एक— भाई कैसा अनर्थ ?

दया— एक प्राणी पर इतने लोगों की चढ़ाई, क्या इस में समझते हो अपनी बड़ाई ?

❀ गाना ❀

दूसरा— दुराचारी को माता बचाना न चहिये।
दुष्कर्मों का बदला चुकाना ही चहिये।
कुटिलता तो देखो कहां तक भरी है।
यह साधू का भेष लजाना न चहिये॥
सती नारियों पर कुदृष्टि यह डालें।
सुशीला को सत से डिगाना न चहिये॥
विधर्मी, कुकर्मी, पतित और पामर।
'हरी' मन्दिर में ऐसों को आना न चहिये॥

शान्ति— न बेटा ऐसा ध्यान मन में न लाना।
सदाचारी हो सदाचार के तुम भाव दिखाना॥
सोचो यदि तुम इसके प्रति दुर्व्यवहार करोगे तो तुम को श्रेष्ठ कौन कहेगा?

तीसरा— तब क्या श्रेष्ठों का यही काम है कि दुष्ट सताया करें और श्रेष्ठ कान तक न हिलाया करें।

क्षमा— दुष्ट यदि अपनी दुष्टता नहीं छोड़ते तो श्रेष्ठ अपनी श्रेष्ठता क्यों छोड़ दें। विष का काम मारना और अमृत का काम जिलाना है, न विष अमृत का स्वाभाव ग्रहण करता है न अमृत विष का। फिर तुम इस के स्वभाव पर क्यों जाते हो?

चौथा— माता हम इसका स्वभाव तो ग्रहण नहीं करते पर हम तो इस के स्वाभाव का इसे मज़ा चखाते हैं।

ज्ञान— किसी को दंड देने का तुम्हें कब अधिकार है। इस का न्याय तो न्यायाधीश पर छोड़ दो। जो सम्पूर्ण कर्मों का फल दाता है।

दया— आइये फिर करुणानिध को करुण स्वर से बुलाईये।

दया आदि-स्तुति-सुनिये २ पुकार भोला अविनाशी॥

अविनाशी घट घट वासी॥ सुनिये २

तीन नैन चन्द्र भाल गंग जटा सोहे।

बाघाम्बर तन धार प्रभू भक्तन मन मोहे॥

कर त्रिशूल और कुठार कंठ नाग कारे।

काम बाण हृदय माहिं मारत हमारे॥

लगत बाण छटपटात नारी नर सारे।

'हरी' शरण देओ कौन तुम बिन हमारे॥

[धड़ाके की आवाज़ के साथ सीन का ट्रान्सफर हो जाना। शिव का प्रत्यक्ष दर्शन देना सब का भगवान् शङ्कर को दंडवत् करना मौक़ा पाकर काम का भाग जाना]

[सब का स्तुति करना]

जय जय कैलाशी, सुख के राशी हे अविनाशी दुःख हरो।
गिरजा उर वासी, काम विनाशी, ज्ञान प्रकाशी कृपा करो॥
पतित उद्धारी, गल मुँड धारी, उमा विहारी मोद करो।
पत रखवारी, संकट हारी विनय हमारी, सुनो प्रभो॥
भव सिंधु अपारा, अति विस्तारा, नहीं निस्तारा कहा करो।
तन मन धन हारा, नहीं सहारा प्राण अधार चरण धरो॥
माया गुण ज्ञाना, वेद बखाना, कृपा निधान पति राखो।
यह काम अपावन, पतित बनावन, बुद्धि नशावन है भायो॥

[शङ्कर जी को सबका प्रणाम करना]

शङ्करजी—भक्तों तुम्हारा कल्याण हो। कहो किस हेतु से तुम ने मेरा आवाहन किया।

दया— भगवान्! क्या आप नहीं जानते कि काम ने हम पर क्या २ अत्याचार नहीं किये? भगवान्! क्या आप नहीं जानते कि यह दुष्ट हम पर भूखे सिंह की भाँति टूटा पड़ता है। हर दम हमारे हड़पने ही की घात में लगा रहता है। इसके रहते हमारा कल्याण कैसे हो सकता है?

शङ्करजी—देवी अब तुम इसकी चिन्ता न करो। इस के पाप का घड़ा भरने वाला है। पाप कर्मों का फल शीघ्र ही मिलने वाला है। अब तुम चिन्ताओं का दमन करो यह दुष्ट तुम्हें न सताने पायेगा।

❀ गाना ❀

ज्ञान— तज दे मन जो कुछ हो प्रतिकूल।
फूल को तज जो शूल का चुनते उनकी मति पर धूल॥
काम क्रोध मद लोभ मोह यह जानों जग के शूल।
हरि से प्रेम और सज्जनता है यह सुन्दर फूल॥
विश्व मार्ग में बिछे हुये हैं जित देखो तित शूल।
शूल का खटका वह नहीं करते जिन गहि लेनी मूल॥
शूकर, मल बिन, स्वर्ग सुखों को क्यों समझे अनुकूल।
क्षीर नीर की 'हरी' परख में हंस ने कब की भूल॥

ड्राप सीन